जुलाई 2010 ■ Rs.20/-

चन्दामामा

अब पॉपिन्स आए एक शानदार और नए पैक में.

ये सच है बच्चों! आपका मनपसंद पारले पॉपिन्स अब आए एक ऐसे पैक में जो है पहले से ज़्यादा स्मार्ट, बेहतर और ज़्यादा हाइजिनिक भी. इसका दोहरा रैपर इसकी गोलियों को रखे ज़्यादा समय तक फ्रेश और टेस्टी. इसके अंदर आपको मिलेंगे चमकीले रंगोंवाले वही फ्रूटी फ़्लेवर्स, जिनका आप और आपके दोस्त जी भरके मज़ा उठा सकते हैं. तो अपने क़रीबी स्टोर से इस नए स्मार्ट पैक को आज ही ले आइए.

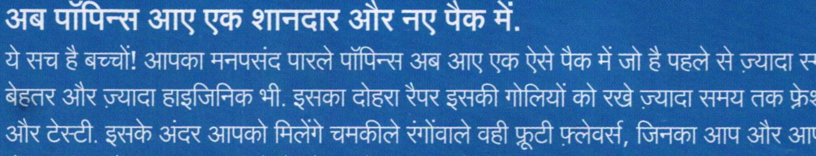

*MRP incl. of all taxes for net weight 18g

http://www.chandamama.com/parle

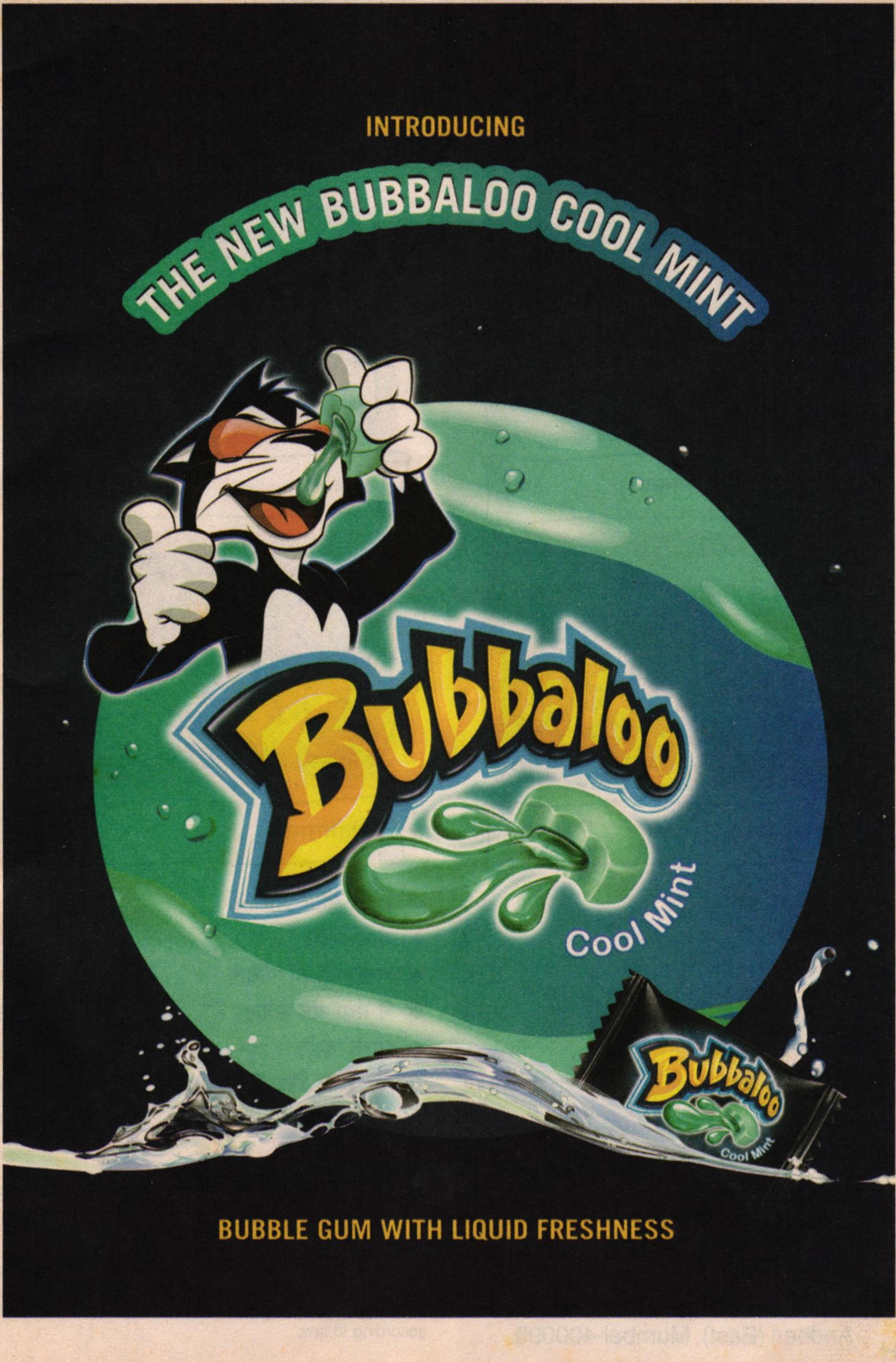
INTRODUCING
THE NEW BUBBALOO COOL MINT
Bubbaloo
Cool Mint
Bubbaloo
Cool Mint
BUBBLE GUM WITH LIQUID FRESHNESS

अनुक्रम

चन्दामामा सम्पुट-६१ जुलाई २०१० सञ्चिका-७

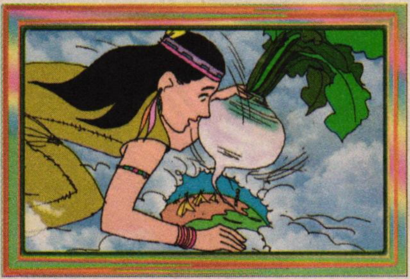

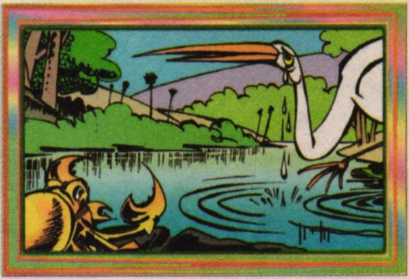

सपना और सेही मानव ...१०

मित्र भेदू ...२९

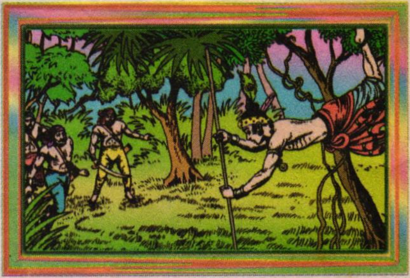

महान कौन? ...४४

शिथिलालय ...६०

* पाठकों का पन्ना ... ०६
* कला-प्रेमी ...१३
* आर्य ...१९
* उत्तरकाण्ड ...२३
* चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली-१८ ...३२
* सुडोकू पहेली ...३३
* यूरेका ...३४
* आत्माहुति ...३५
* छोटा बादल ...३६
* छोटी बहन और चाँद ...३८
* मान-मर्दन ...४७
* चन्द्रभानु का गोदान ...४८
* मैं क्या बन सकता हूँ? ...५२
* भारत दर्शक ...५३
* चूँ-चूँ का डिब्बा ...५४
* एक चम्मच शकर ...५६
* अनुनिर्वा ...६६
* हँसते-हँसते हो जा लोट-पोट ...७१
* अपनी-अपनी महानता ...७२

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Cross Road 'B', MIDC,
Andheri (East), Mumbai-400093.

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

बारिश, बारिश और भी बारिश

जहाँ हम यह मना रहे हैं कि मानसून सामान्य हो, वहीं हमें पाठकों से इस बारे में बहुत सारे ई-मेल मिल रहे हैं कि पानी कैसे बचाया जा सकता है और बारिश के पानी की हार्वेस्टिंग कैसे की जा सकती है। इनमें से कुछ विचार तो बड़े सरल और अमल करने में आसान हैं। हमारा सभी पाठकों से अनुरोध है कि आप भी इस बारे में गहनता से सोचें और अपनी तकनीक और तरीका खोज निकालें।

नया शैक्षणिक वर्ष शुरु हो गया है और नए-पुराने दोस्तों के साथ इस नए साल में अपने काम पर लगने से पहले हमें अपने साल की प्लानिंग कर लेनी चाहिये - शैक्षणिक कार्यों के लिए भी और गैर-शैक्षणिक कार्यों के लिए भी। हमें अपने लिए स्पष्ट और प्रातियोग्य लक्ष्य निर्धारित करना चाहिये - जैसे हमारे परीक्षा परिणाम में ५-१०% सुधार या कोई नई कला या खेल सीखना आदि। हमें बताइये कि आपके प्लान क्या हैं! आप उन्हें कैसे पूरा करेंगे? हम हर संभव तरीके से आपकी मदद करेंगे।

हमें अपने वार्षिक अंक का बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला है। क्या आपने अपनी प्रति मँगवा ली है? आर्टबुक भी काफी लोकप्रिय हुई है! सारी प्रतियाँ बिक जाने से पहले अपनी प्रति बुक करा लें!

अगले कुछ महीनों के लिए हमारे पास कुछ बहुत मज़ेदार ख़बर है। उत्सुक हैं? हाँ, वह तो होंगे ही...लेकिन अपनी साँसें थामिये और धैर्य के साथ इस जगह पर देखते रहिये!

- सम्पादक

जुलाई २०१० Rs. 20/-
Founded by **B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher:
Prashant Mulekar
Associate Editors:
Sowmya Rajendran, R. Vaasugi
Content Head - Online:
Sowmya Bharadwaj
Senior Artists:
K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist:
Venki
Creative Designer:
Meghana Vaidyanathan
Creative Writers:
S. Niveditha, R. Rama
Layout Designers:
B. Thirumal, K. Narendra
Production In-charge:
Prashant Pawar
Circulation:
e-mail: circulation@chandamama.com
Head - Sales and Circulation:
Sanjay B Thorat
Manager - Sales & Circulation:
AB Sairam
Manager - Sales & Circulation (West & North):
Vinay K Brid
Assistant Manager - Circulation:
Rajendra K Jadhav
Asst. Manager - Sales & Circulation (East):
Subhankar Rej
Sales Officer - Circulation:
K. Ravishankar
Advertisement:
e-mail : sales@chandamama.com
Subscription:
e-mail: Subscription@chandamama.com
Ramya K (Chennai)
Ph: +91 44 4399 2829
Jalpa Doshi (Mumbai)
Ph: +91 22 2831 2872/2831 1849
Head Office : CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Cross Road 'B', MIDC,
Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by Prashant Mulekar at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, B-3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.
Editor : Prashant Mulekar

पाठकों का पन्ना

प्रिय चन्दामामा,

हमारे नाम कश्यप और सिद्धार्थ हैं और हम १३ और ११ वर्ष के हैं। हमें विक्रम बेताल की कहानियाँ पढ़ने का शौक है। और हर महीने हमें रामायण और दूसरी कहानियाँ पढ़ने का भी इन्तज़ार रहता है। कृपया इनमें महाभारत और दूसरी पौराणिक कथाएँ भी शामिल करें। हमें और कहानियाँ चाहिए। साथ ही कृपया यह देखें कि किताब हर महीने की पहली तारीख को आ जाए।

- एम कश्यप और एम सिद्धार्थ, तिरुपति

प्रिय संपादक,

सबसे पहले अप्रैल २०१० में शिथिलालयम शुरु करने के लिए बधाइयाँ और शुभकामनाएँ। बेताल कथा, स्वर्ण पुष्प बहुत अच्छी थी। लेकिन इसे राक्षस के उसका रुप छूट जाने के साथ समाप्त होना था क्योंकि उसने बहुत बड़ा त्याग किया था। उसे इन्सान बना देना या मोक्ष दे देना बहुत अच्छा परिवर्तन होता।

- श्रीलेखा, हैदराबाद

प्रिय चन्दामामा,

मैं आपकी एक पन्ने की कहानियाँ पढ़ने का शौकीन हूँ। कृपया ऐसी कहानियाँ और प्रकाशित करें। आपकी सभी कहानियाँ बहत मजेदार होती हैं। बच्चे हर माह विक्रम बेताल की कहानी सुनने का आनन्द लेते हैं। मेरा परिवार चुटकुले और न्यूज़ फ़्लैश पढ़ता है और भारतीय भाषाएँ सीखता है।

- पुलीजला रविन्दर राव, हैदराबाद

आप अपने विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं।

Visit us at : http://hindi.chandamama.com

BSA LADYBIRD

Your best friend for life.

Shine

Get used to the tantalizing taste of freedom.

There's no greater feeling than having the wind in your hair, the open road beneath your feet. With a ladybird, freedom is yours. So make the most of it and enjoy every moment!

www.ticyclesindia.com

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 10% off on subscription renewals! (All Editions)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

Choose your Chandamama! Go to www.chandamama.com & subscribe Now!!

Chandamama is available in English and 12 regional languages. Junior Chandamama for children below 9 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Santali ☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior

Name: ....

Date of Birth: .... Sex :....................

Address: ....

....

....

.... City: ....

State:.................... Pin:....................

Telephone:....................

Mobile:....................

Email:....................

Subscription Number (for renewals):....................

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees....................

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on....................

....................bank.

Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
B-3, Cross Road 'B',MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at: www.chandamama.com

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH (Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		Rs. 60	Rs. 135	Rs. 240	Rs. 375
REGIONAL (Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 770	Rs. 900
You Save		Rs. 50	Rs. 110	Rs. 190	Rs. 300
JUNIOR (Rs. 15/- per copy)	Rs. 180	Rs. 325	Rs. 460	Rs. 575	Rs. 675
You Save		Rs. 35	Rs. 80	Rs. 145	Rs. 225

** conditions apply

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

Log onto www.chandamama.com

Your Chandamama is available in many avatars!

Rs.20/-

Rs.20/-

Regional Chandamama

(9+ age group):
Read your favourite stories in your own language! Chandamama takes you closer home even as your imagination soars!

Your Language, Your Chandamama.

* Ramayana
* Vikram-Vetal
* Panchatantra
* Arya

Available in 12 Languages:
Telugu, Hindi, Marathi, Oriya, Kannada, Bengali, Tamil, Malayalam, Gujarati, Assamese, Sanskrit, Santali

Rs.25/-

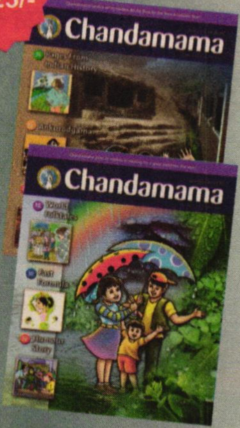

Chandamama English

(9+ age group):
A children's magazine that has adapted itself to the changing needs of children across decades, Chandamama English offers you a delectable mix of the classic and the contemporary in 70 pages that value fun!

• Sports • Technology • Contemporary stories • Classics

Revamped. Redesigned. Relevant. Read it!

You name it and it's got it!

Rs.15/-

Junior Chandamama

(4+ age group):
A magazine for the little ones peppered with activities, pictures, and stories that will grip their imagination.

Make friends with Mintoo, Gooba, and a host of other whacky characters!

* Picture story
* Puzzles & Crosswords
* Colouring
* Rebus

सपना और सेही मानव

कोलोराडो के एक छोटे से गाँव में, सपना नाम की एक लड़की रहती थी, जो अरापाहो नाम की जनजाति की थी। अपनी उम्र की दूसरी लडकियों की ही तरह, उसे भी जंगल में फलियाँ इकट्ठी करते हुए घूमने, खेल खेलने और चमड़े की पोशाकें सिलने का शौक था। लेकिन सपना शाम के समय चीलें और बाज भी देखती थी।

"तुम्हें इन पक्षियों को देखकर क्या आनन्द आता है सपना? ये पक्षी मांस खाते हैं!" उसके दोस्त कहते। सपना उन्हें झिड़ककर कहती, "तो? हम भी तो मांस खाते हैं, नहीं क्या? हम भी तो खाने और चमड़े के लिए जानवरों का शिकार करते हैं!"

लेकिन वे लड़कियाँ कभी नहीं समझती थीं। उन्हें यह देखकर बड़ा झटका लगता था कि सपना मांस के टुकड़े लाकर पक्षियों को खिलाती थी। वे सिर झटककर वहाँ से चली जातीं।

एक दिन, सपना ने ज़मीन पर पड़े एक ज़ख़्मी बाज को देखा। वह दौड़कर उसके पास गई और उसका मुआयना किया। बाज ने सपना के पास आने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं की क्योंकि उसे याद था कि यह लड़की हमेशा उसके लिए मांस लाती थी। सपना ने देखा कि सेही का एक तीखा काँटा बाज के पंख के पार निकल गया था। उसने धीरे से उसे बाहर खींचा और घाव को घिसा। बाज उठ खड़ा हुआ। उसने अपने पंख फैलाए और उड़ गया।

सपना ने आसपास देखा और उसे इसका कारण वहीं दिखाई दे गया। एक सेही कॉटनवुड के पेड़ पर चढ़ने का प्रयास कर रही थी।

उसने अपने दोस्तों को आवाज़ लगाई, "एथेट! डाए! इल्लानिपी! आओ इस सेही को पकड़ें। हमारे पास सौ साल तक मोकेसिन सिलने के लिए पर्याप्त काँटे हो जाएँगे!"

सेही जल्दी-जल्दी दौड़कर पेड़ पर चढ़ी और सपना उसके पीछे चढ़ गई। उसके दोस्तों ने उससे पेड़ से उतर आने को कहा, लेकिन सपना तो उसे पकड़ लेने के लिए कटिबद्ध थी। पेड़ पर चढ़ने का

अच्छा अभ्यास होने से वह सेही का तेज़ी से पीछा करती रही।

''रुको काँटों की पोटली, तुम्हें अभी पकड़ती हूँ,'' वह गुस्से से बोली। जितना वह ऊपर चढ़ती जा रही थी, उतना ही उसके दोस्तों की आवाज़ें दूर से आती मालूम हो रही थीं। सपना को लगा कि वह पेड़ के ऊपरी छोर तक पहुँच गई थी, लेकिन पेड़ था कि और ऊँचा होता जा रहा था। तब उसने पहली बार मुड़कर नीचे देखा।

''ये कैसी जगह है?'' समतल सफेद फ़र्श देखकर सपना ने सोचा। वह पेड़ से उस फ़र्श पर उतर गई और चारों तरफ देखा।

''मुझे लगता है ये आकाश की दुनिया है। हर तरफ सफेद बादलों के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता। कितना बोरिंग है, नीचे की दुनिया जैसा नहीं,'' सपना ज़ोर से बोल पड़ी।

''पर तुम इसकी आदत डाल ही लो, क्योंकि तुम्हें बाकी जीवन यहीं बिताना है!'' एक बूढ़ा आदमी न जाने कहाँ से प्रकट हुआ।

''तुम कौन हो?'' सपना गुस्से से बोली। उसने यह देखने के लिए फ़र्श का मुआयना किया कि क्या उसमें वापस पृथ्वी पर जाने का कोई मार्ग है?

बूढ़े आदमी के बाल एक जूड़े की शक्ल में बँधे थे जिन्हें उसने सेही के तीन चमकदार पंखों से टिका रखा था।

''रुको क्या तुम... क्या तुम वही सेही हो?'' सपना ने उत्सुकता से पूछा।

''तुम बहुत चतुर हो, लड़की। लेकिन बातें कम करो। मेरी नौकरानी के रुप में तुम्हें बहुत काम करने पड़ेंगे!'' सेही मानव ने कहा।

''मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं करने वाली हूँ।'' सपना दृढ़ता से बोली।

''क्या सच में?'' सेही मानव बोला और उसने कुछ तीखे काँटे निकालकर डार्ट की तरह फेंके। वे उसके हाथों में चुभ गए और सपना दर्द से चिल्ला उठी।

शीघ्र ही सपना को समझ में आया कि बूढ़े की बात मान लेना ही ठीक है। और इस प्रकार, वह उसके लिए भैंस के चमड़े की पोशाकें बनाने और रात के खाने के लिए शलजम पकाने लगी।

रोज़ पोशाकें सिल-सिलकर उसके हाथ दुःखने लगे। क्या फायदा था? सेही मानव आधे दिन में ही उन्हें फाड़ लेता था। जब एक बार उसने यह

बात कही कि उसकी पोशाकें बनाना कितना बेकार का काम था, तो सेही मानव ने गुस्से में आकर उसकी तरफ एक काँटा फेंका।

''आSSSह!'' सपना चिल्लाई और फिर उसने इस बारे में कभी कोई बात नहीं की।

एक दिन सपना उसके रात के भोजन के लिए कुछ जंगली शलजम तोड़ने गई। उसने एक बड़ा सा शलजम तोड़ने की कोशिश की लेकिन वह नहीं टूटा। गुस्से में आकर सपना ने पूरा ज़ोर लगाकर शलजम को खींचा और झटका दिया।

अंत में वह विशाल और अड़ियल शलजम उसके हाथ में आ गया। शलजम के स्थान पर उसे एक बड़ा सा छेद दिखाई दिया और उसने उसमें से झाँका। उसे जो दिखा उससे वह खुशी से लगभग रो पड़ी। क्योंकि नीचे दूर पर उसे अपनी पृथ्वी दिखाई दी। उसने शलजम को उसकी जगह पर रख दिया। उसका दिमाग अपने भाग निकलने की योजना बनाने में बहुत उत्तेजित हो गया।

सपना ने चमड़े के टुकड़े काटकर उनकी रस्सी बनाना शुरु कर दिया। हर रोज़ वह थोड़ी रस्सी बनाती और उसे अपने बिस्तर के नीचे छुपा देती। अंत में जब उसे यकीन हो गया कि रस्सी काफ़ी लम्बी हो गई है, तो एक दिन उसने रस्सी का एक सिरा एक चट्टान में बाँधा और शलजम के नीचे के छेद में से उतर गई।

जब वह नीचे बहुँचने से बहुत दूर थी, तब ऊपर छेद में से एक दुष्ट चेहरे ने झाँका। ''तुम भाग नहीं सकोगी!'' सेही मानव बोला। उसने छेद में से रस्सी को वापस ऊपर खींचना शुरु कर दिया। सपना रोने लगी, ''वापस काँटे के डार्ट, शलजम और कपड़े सिलना!'' उसने दुःखी मन से सोचा।

अचानक उसने अपने नीचे किसीकि पंखों का आवाज़ सुनाई दी। यह उसका दोस्त बाज था! उसने देखा कि उसका दोस्त ठीक उसके पैरों के नीचे उड़ रहा था। अपनी आँखें बन्द करके वह बाज के ऊपर कूद पड़ी और उसे कसकर पकड़ लिया। एक चील और एक गिद्ध उसके बिलकुल पास में उसे आस-पास से निकल रहे काँटों के तीरों से बचाते हुए उड़ रहे थे।

शीघ्र ही, सपना के पैरों ने ज़मीन छू ली। वह दौड़कर घर गई। जब लोगों ने उसकी कहानी सुनी, तो उनके मन में शिकारी पक्षियों के लिए आदर भाव जागा। उसके बाद से उन्होंने उनके लिए हमेशा मांस के कुछ टुकड़े छोड़ना शुरु कर दिया।

-रमा रमेश द्वारा पुनर्कथित

वेताल कथा

कला-प्रेमी

राजा विक्रमार्क बिना थके पेड़ के पास गए और शव को उतारकर अपने कंधे पर रख लिया। फिर वे चुपचाप वापस श्मशान की ओर चल पड़े। शव में छुपा बेताल कहने लगा, ''हे राजन्! अब तक तुम इस काम में हर क़दम पर विफल रहे हो। फिर भी तुम जितनी लगन से इसमें लगे हो और तुम्हारी एकाग्रचित्तता की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। इसके बावजूद कि तुम यह काम बहुत सी परेशानियों से जूझकर कर रहे हो, और तुम्हारे सभी प्रयास अन्त में विफल हो सकते हैं, तुम पूरे मन से काम कर रहे हो। लेकिन किसी असम्भव काम को करने की कोशिश न करना ही ठीक है। खुद के अन्दर छुपे कला के खज़ाने की परवाह न करते हुए, मुकुन्द नामक व्यक्ति ने खुद को मिल रही अपार दौलत को ठुकरा दिया और यहाँ तक कि एक महान राजा

का आतिथ्य भी ठुकरा दिया और उस स्थान को छोड़कर दूर निकल गया। श्रम को भूलने के लिए सुनो, मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाता हूँ।''

यह कहकर बेताल ने कहानी शुरु की।

मुकुन्द अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अंग राज्य के एक गाँव में रहता था। वह अपनी पैतृक ज़मीन पर खेती करके अपने परिवार का पालन करता था।

क्योंकि खेती से काफ़ी समय बचता था, अतः मुकुन्द ने खाली समय में कठोर पत्थर की मूर्तियाँ बनाना सीखना आरम्भ कर दिया। धीरे-धीरे मुकुन्द मूर्तिकला में पारंगत हो गया।

एक दिन मुकुन्द की पत्नी ने उससे कहा, ''तुम हमेशा देवियों की मूतियाँ बनाते हो। मेरी मूर्ति कब बनाओगे?'' मुकुन्द ने मुस्कुराकर उसे अपने सामने बैठने को कहा और उसकी मूर्ति बनानी शुरु कर दी। एक माह बाद भी मूर्ति आकार नहीं ले पा रही थी। मुकुन्द की पत्नी पति के सामने स्थिर बैठे-बैठे परेशान हो गई और पूछा, ''क्या मूर्ति बनाना इतना मुश्किल है?''

मुकुन्द ने अपने हाथ की छैनी-हथौड़ी एक ओर रखकर उत्तर दिया, ''हाँ, बहुत मुश्किल है। तुम्हें देखकर मुझे तुम्हारे नाक-नक्श पत्थर पर उकेरने हैं और इसमें समय लगता है। देवी-देवताओं की मूर्तियों में यह आसानी है कि मैं उन्हें मनचाहा आकार दे सकता हूँ और किसी को यह नहीं लगेगा कि मूर्ति पहचानी नहीं जा रही।''

उस समय तक मानसून आ चुका था और खेती-किसानी का काम आरम्भ हो चुका था। मुकुन्द ने दिन में खेती का काम आरम्भ कर दिया और खाली समय में अपनी पत्नी की मूर्ति बनाना जारी रखा।

एक दिन, एक साधु महाराज उस ओर से निकल रहे थे। अचानक वे रास्ते के पास तालाब में गिर गए। वे अपनी जान बचाने के लिए चिल्लाए। मुकुन्द अपना काम छोड़कर दौड़ा और उन्हें बचाया। बाद में साधु ने मुकुन्द की मूर्ति को देखकर कहा, ''मुकुन्द! तुमने मेरा जीवन बचाया है। मैं तुम्हें एक वरदान देना चाहता हूँ। अब से, तुम जब भी कोई मूर्ति बनाओगे, तो वह बहुत तेज़ी से पूरी होगी और उसमें जिसकी मूर्ति है, उस व्यक्ति के नाक-नक्श के साथ ही उसकी भावनाएँ भी

दिखाई पड़ेंगी। इससे तुम्हारा जीवन बहुत सुखी हो जाएगा।'' मुकुन्द को इन शब्दों पर भरोसा नहीं हुआ। उसने सोचा कि यदि साधु महाराज में इतनी शक्ति है तो वे खुद को डूबने से क्यों नहीं बचा सके? साधु महाराज मुस्कुराए, जैसे कि उन्हें मुकुन्द की विचार-श्रृंखला का पता लग गया हो। फिर वे अपनी तीर्थयात्रा पर आगे बढ़ गए।

लेकिन चमत्कार! मुकुन्द ने उसी रात बिजली की गति से अपनी पत्नी की मूर्ति पूरी कर डाली। मूर्ति हू-ब-हू उसकी पत्नी की शक्ल की थी और उसपर प्रेम और सद्भावना की गहरी छाप थी। इससे, गाँव के सभी लोगों ने मुकुन्द से अपनी मूर्ति बनाने का अनुरोध करना शुरु कर दिया।

यहाँ तक कि मुकुन्द के बच्चे भी उससे अपनी मूर्तियाँ बनाने के लिए कहने लगे। उसका एक बच्चा दस वर्ष की उम्र का था और दूसरा सात वर्ष का। मुकुन्द ने उनकी एकदम सजीव प्रतिमाएँ बनाईं, जो अत्यन्त सुन्दर थीं। ये मूर्तियाँ भी केवल एक रात में पूरी हो गईं।

जब मुकुन्द अपनी पत्नी और बच्चों की मूर्तियों को देखकर सुख का अनुभव कर रहा था, अचानक गाँव का मुखिया वहाँ आया और मुकुन्द को चेताया, ''देखो, तुम्हें मेरी मूर्ति बनाना है। तुम्हें जितना पैसा चाहिए, लेलो। मूर्ति नहीं बनाई तो तुम जानते हो क्या होगा।'' यह मुखिया गाँव में बहुत बदनाम था। चालीस वर्ष की उम्र में ही वह गाँव वालों के प्रति बहुत नृशंस माना जाता था। ऐसे व्यक्ति की मूर्ति बनाना

बहुत मुश्किल भरा था क्योंकि उसकी सारी क्रूरता मूर्ति के चेहरे पर झलकती। मुकुन्द को समझ में आया कि साधु महाराज द्वारा दिया गया वरदान वास्तव में काम कर रहा था।

यदि वह मूर्ति न बनाता, तो वह भी एक समस्या थी! गाँव का मुखिया उसे और उसके परिवार को परेशान कर सकता था। मुकुन्द की समझ में नहीं आ रहा थश कि वह क्या करे, क्योंकि उसकी कला ने उसके लिये मुश्किलें खड़ी कर दीं थीं। उसने गाँव के मुखिया की मूर्ति एक रात में न बनाकर काम को एक सप्ताह तक खींचा। एक दिन मुखिया उस पर ज़ोर से चिल्लाया, ''मैं मूर्ति में अपना चेहरा देखने के लिए उत्सुक हूँऔर तुम हो कि मूर्ति का काम पूरा ही नहीं कर रहे हो।''

अंत में मुकुन्द ने इस देरी का असली कारण मुखिया को बता दिया।

''मैं तुम्हारी बेपर की कहानियों में विश्वास नहीं करता। तुम जो भाव मूर्ति पर दिखाना चाहोगे, वे ही वहाँ दिखेंगे। मेरे दिल-दिमाग की भावनाएँ मूर्ति में कैसे दिख सकती है?'' वह चिल्लाया।

मुकुन्द ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। अंत में मूर्ति बनकर तैयार हो गई। जैसा कि मुकुन्द ने कहा था, उसके चेहरे पर बहुत क्रूरता का भाव था।

गाँव का मुखिया मुकुन्द और उसके परिवार को क्या सज़ा देता यह पता नहीं लग पाया क्योंकि तब तक अचानक राजा के सिपाही मुकुन्द के लिए एक विशेष रथ लेकर वहाँ आए। मुकुन्द, उसका परिवार और गाँव का मुखिया, सभी चकित रह गए। तुरन्त ही, मुकुन्द और उसका परिवार राज्य की राजधानी के लिये निकल पड़े। अंग देश के राजा ने पूरे राज्य में अपनी मूर्तियाँ लगाने का निर्णय किया था और इसलिए वे पूरे देश से सभी मूर्तिकारों को अपने पास बुला रहे थे।

राजा ने मूर्तिकारों को यह बताया कि वे क्या सोच रहे थे। ''मेरी मूर्ति देखकर लोगों को डर से काँपना चाहिये। इससे मेरे राज्य में कोई अपराध नहीं होंगे। अतः आप लोग अपनी श्रेष्ठ

योग्यताओं का उपयोग करके ऐसी मूर्तियाँ तैयार कीजिये।''

मुकुन्द एक बार फिर मुश्किल में था। दूसरे मूर्तिकारों की बनाई मूर्तियाँ सामान्य दिखेंगी। लेकिन उसकी बनाई मूर्ति में राजा के आंतरिक विचार, जैसे गुस्सा और सत्ता का मद दिखाई देता।

राजा ने सभी मूर्तिकारों के लिए एक-एक घर का प्रबन्ध कर रखा था। अपने पहले प्रयास में, मुकुन्द एक शिला लाया और रात में राजा की एक सुन्दर तस्वीर सामने रखकर मूर्ति बनानी शुरु की। जब मूर्ति पूर्ण हुई, वह काफी सुन्दर और सुहावनी लग रही थी। चेहरे पर चित्र से भी अधिक मदद करने का भाव दिखाई दे रहे थे। इसके बाद, मुकुन्द आराम से सो गया।

मुकुन्द के घर पर नज़र रख रहे जासूसों ने राजा को रात को ही खबर की कि मुकुन्द ने मूर्ति पूरी कर ली थी। राजा आश्चर्यचकित हो गया कि मूर्ति एक ही रात में कैसे बन सकती है? उसने मुकुन्द के घर जाकर देखने का निश्चय किया। मुकुन्द की बनाई मूर्ति देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने तुरन्त ही मुकुन्द को पूरे देश में मूर्तियाँ लगाने के काम का प्रभार सौंप दिया और मुकुन्द को दरबार के प्रमुख लोगों में से एक बना दिया गया।

मुकुन्द का परिवार सारे राजसी ठाठ-बाट का आनन्द ले रहे थे। हर ओर नौकर-चाकर थे

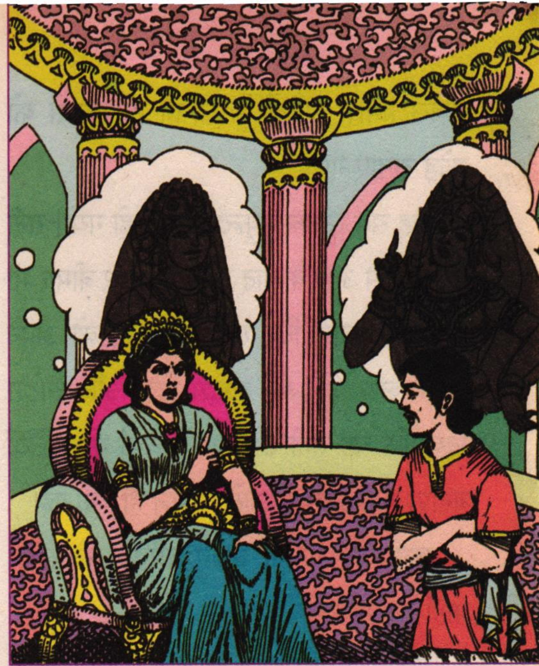

और कहीं भी जाने के लिए रथ आदि उपलब्ध थे। इस प्रकार, उसका परिवार बड़े आदमियों जैसी जीवन-शैली का अभ्यस्त हो गया।

एक दिन रानी ने मुकुन्द के पूरे परिवार को अपने पास बुला भेजा और पूरे दिन के लिए मेहमान की तरह रखा। मुकुन्द की पत्नी और बच्चों ने पूरा दिन उसके साथ बिताया। रानी के महल से बाहर आने तक वे बहुत परेशान रहे। वहाँ तो साँस लेना भी दूभर था।

वापस आकर मुकुन्द की पत्नी ने उससे कहा, ''मैंने कभी सोचा भी न था कि रानी के महल में रहना इतना मुश्किल होगा। रिश्तेदार और नौकर सभी रानी को देखकर थर-थर काँपते हैं। वे क्या खाएँगी और कब, क्या पियेंगी और कब क्या माँग लेंगी, ये कोई नहीं जानता था।

केवल हमारी आँखों के सामने ही नौकरों को कोड़े लगाए गए।''

यह सब सुनकर मुकुन्द चिंतित हो गया। रानी के महल से आने के बाद उसका परिवार बीमार भी हो गया। अगले दिन रानी ने मुकुन्द को अपने सामने लाए जाने का आदेश दिया और आदेश दिया कि वह रानी और उसके बच्चों की मूर्तियाँ बनाए। मुकुन्द की तो जैसे धड़कन ही रुक गई।

उसी रात मुकुन्द अपने परिवार को लेकर कहीं दूर भाग गया।

कहानी समाप्त करते हुए बेताल ने विक्रम से कहा, ''मुझे लगता है राजसी ठाठ-बाट ने मुकुन्द को उसके हुनर से दूर कर दिया था। अन्यथा वह कम से कम अकेले में रानी की ऐसी मूर्ति बनाने का प्रयास करता। वह यह सिद्ध होने से पहले ही देश छोड़कर भाग गया कि रानी की मूर्ति गुस्सैल दिखेगी। हालाँकि उसे यह दोष नहीं दिया जा सकता कि उसने आराम का जीवन छोड़कर अपने परिवार को फिर से ग़रीबी में धकेल दिया। फिर भी इस व्यवहार का कारण क्या था? यदि तुम इसका जवाब जानते हुए भी नहीं बताओगे, तो तुम्हारा सिर फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।''

विक्रमार्क ने उत्तर दिया ''मुकुन्द ने कभी भी अपने हाथ के हुनर को धन कमाने का माध्यम नहीं माना था। राजसी ठाठ तो अपने ही आप उसके जीवन में आ गए थे। वह अपने को साधु महाराज से मिले वरदान से सन्तुष्ट नहीं था और यह देखने का प्रयास कर रहा था कि वह अपने हुनर से अधिक से अधिक न्याय कर सके। उसने कभी भौंडे प्रदर्शन के लिए उसका इस्तेमाल नहीं किया। अतः, वह रानी की मूर्ति बनाने के काम से अलग हो गया।''

यह कहते ही विक्रमार्क का मौन टूट गया और बेताल शव समेत वहाँ से उड़कर वापस पेड़ पर आ बैठा। विक्रम ने अपनी तलवार उठायी और बेताल के पीछे दौड़ पड़े।

- श्री एम वी वी सत्यनारायण

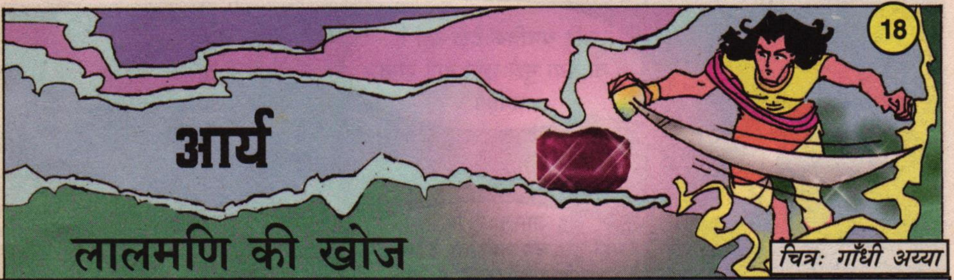

सालुंकी ने जादू का उपयोग कर प्रभात की जुड़वाँ आत्मा - थारविक बनाई। क्योंकि अब थारविक सालुंकी का बेटा है, अतः वह उसके लिए लालमणि प्राप्त कर सकता है। जब गॉडफ़ादर को यह अहसास होता है कि प्रभात बदल गया है, तो वह उसे आर्य के पास भेजने का निश्चय करता है।

यदि थारविक देख रहा है, तो क्या मुझे छुपा नहीं होना चाहिये?
वह जानता है कि तुम यहाँ हो। वह समझता है कि तुम मरिघा को मारने में मेरी मदद करोगे।
लेकिन वह ऐसा क्यों सोचेगा?
तो क्या इसका अर्थ यह है...
मरिघा की हत्या रानी के सपने में आई थी।.
मेरा आज का शिकार। एक और बेकार का पाप।
सारे ही पाप बेकार होते हैं, मरिघा।
बातें...बातें...और बस...और...

यह यहाँ क्यों आया है?
मेरी सहायता करने...
यह क्या पिताजी? क्या आपने पाला बदल लिया है?
हमारी किस्मत ने पाला बदल लिया है मेरी बच्ची।
पिताजी! आपको ऐसा नहीं करना चाहिये!

तुम यहाँ से ज़िन्दा नहीं जा सकोगी, मरिघा।
अपनी आँखें बन्द करो। अँधेरा हो जाने दो।
तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? क्या तुम समझते हो कि तुम अपनी चालबाज़ी से मुझ धोखा दे सकते हो?
ये रही हिम्मतवाली मरिघा। अब बच्चों को छोड़ दो, थारविक।
क्रमशः

उत्तरकाण्ड

राम शम्बूक को मारकर अयोध्या आए और आते ही उन्होंने द्वारपाल से भरत और लक्ष्मण को बुलाने के लिए कहा। दोनों शीघ्र ही राम के पास आए।

राम ने उनसे कहा, ''मेरे भाईयों, मैं एक राजसूय यज्ञ करना चाहता हूँ। इस यज्ञ से सारे पाप दूर हो जाते हैं। मित्र और चन्द्र ने राजसूय यज्ञ करके ही अमर कीर्ति पाई थी। इस बारे में तुम्हारी क्या राय है?''

भरत ने कहा, ''भैया, आपका धर्म और कीर्ति दोनों इस विश्‍व के लिए उदाहरण हैं। इनमें कोई कमी नहीं है। अतः यदि हमने राजसूय यज्ञ किया, तो बहुत से राजा नष्ट हो सकते हैं। हमार मान के लिए इतने राजाओं का नष्ट होना ठीक नहीं है। मेरी राय में यह यज्ञ करना हमारे लिए उचित नहीं है। फिर आपकी जैसी आज्ञा हो।''

भरत की सलाह राम को जँची। उनकी इस अच्छी सलाह की राम ने मुक्त कंठ से सराहना की।

तब लक्ष्मण ने कहा, ''भैया, सब पापों को मिटाने वाला यज्ञ तो अश्‍वमेध है। किसी समय इन्द्र पर कोई पाप लगा था और निवारण के लिए उन्होंने बृहस्पति की सहायता से यह यज्ञ किया था। परिणामस्वरुप, उनके सभी पांप नष्ट हो गए।''

फिर लक्ष्मण ने यूँ विवरण दिया। किसी समय में वृत्र नामक एक राक्षस था। जाति से राक्षस होने पर भी वह बड़ा धर्मात्मा और ज्ञानी था। तीनों लोकों पर प्रेम से शासन करते हुए उसने धर्म का

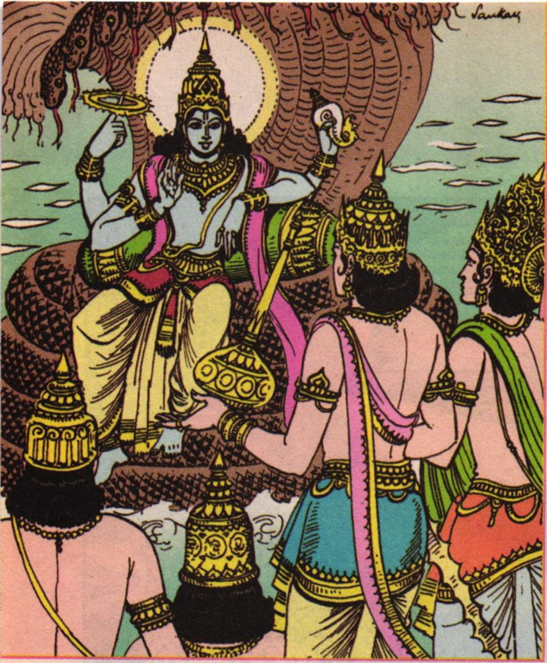

पूर्णतः पालन किया। अतः उसके शासन में भूमि ही सब इच्छाएँ पूरी किया करती थी। बिना हल चलाए फ़सलें फलती-फूलती थीं। फूल-फल सभी स्वादिष्ट हुआ करते थे।

वृत्र ने तपस्या करने की ठानी। अपने बड़े पुत्र को राज्य सौंपकर वह वन में कठोर तपस्या करने लगा। उसके तप को देखकर देवेन्द्र घबरा गया। उसने भगवान विष्णु के पास जाकर कहा, ''वृत्र ने पहले ही तीनों लोक जीत रखे हैं। यदि उसकी तपस्या पूरी हो गई तो जब तक तीनों लोक विद्यमान हैं, तब तक मैं उसे नहीं जीत सकता। अतः यदि आपने उसे समाप्त नहीं किया तो मुझे और देवताओं को कोई नहीं पूछेगा।''

इन्द्र के इस प्रकार रोने-धोने पर भगवान विष्णु बोले, ''महात्मा वृत्र मेरा मित्र है इसलिये मैं उसे नहीं मारुँगा। परन्तु तुम्हारी इच्छा भी ठुकराई नहीं जा सकती। अतः मैं तुम्हें वृत्र को मारने का एक उपाय बताता हूँ। मैं अपनी शक्ति के तीन भाग करके एक भाग तुम्हें, एक तुम्हारे वज्र को और एक भाग भूमि को दूँगा। तब तुम वृत्र को मार सकोगे।''

यह सुनकर इन्द्र और अन्य देवता बड़े प्रसन्न हुए। वे उस वन में गए जहाँ वृत्र तपस्या कर रहा था। वहाँ उन्हें वृत्र अपनी तपस्या के कारण इस प्रकार चमकता नज़र आया जैसे उसकी ज्योति से तीनों लोक ही जल उठेंगे। देवता उसे देखकर घबरा गए। इन्द्र ने दोनों हाथों से वज्र को उंठाया और वृत्र के सिर पर प्रहार किया। इस प्रहार से वृत्र की मृत्यु हो गई।

किन्तु इसके साथ ही इन्द्र को तुरन्त ही ब्रह्म हत्या का पाप लग गया। तब देवताओं ने भगवान विष्णु से कहा, ''हे देव! वृत्र को मारने का उपाय और शक्ति दोनों आपके दिए हुए थे, अतः उसकी हत्या तो आपके हाथों हुई है। फिर इन्द्र को इसका पाप क्यों? इसके निवारण का उपाय बताइये।''

''अश्वमेध यज्ञ करके इन्द्र इस पाप से मुक्त होकर फिर देवेन्द्र बन सकते हैं,'' विष्णु बोले। यह सलाह सुनकर देवता बृहस्पति आदि मुनियों को लेकर इन्द्र के पास गए। इन्द्र अर्धचेतन, भ्रान्त और भयभीत होकर एक जगह पड़े थे। देवताओं ने उन्हें ले जाकर अश्वमेध यज्ञ करवाया जिससे उनका पाप जाता रहा।

लक्ष्मण के यह कथा सुनाने पर राम ने अश्वमेध यज्ञ की महिमा के बारे में एक और कथा सुनाई।

किसी समय कर्दम प्रजापति का पुत्र हल बह्लीक देश पर राज्य किया करता था। देवता, राक्षस, नाग, यक्ष, गंधर्व आदि सभी उसे आदर की दृष्टि से देखते थे।

एक बार हल अपने सेवकों के साथ चैत्र मास

में शिकार खेलने जंगल में गया। उसने खूब शिकार किया और कई जानवर मार दिए। फिर भी उसका शिकार का नशा नहीं गया। शिकार करता हुआ वह उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ कुमारस्वामी पैदा हुए थे। वहाँ पार्वतीजी, शिवजी और उनके लोग थे। उस पर्वत प्रदेश की यह विशेषता थी कि वहाँ जन्तु, पक्षी और पेड़ सभी स्त्री थे और वहाँ कोई पुरुष नहीं रह सकता था।

वहाँ पहुँचते ही हल और उसके नौकर-चाकर भी स्त्री बन गए। अपने में यह परिवर्तन देखकर हल को बहुत डर लगा। वह जाकर शिवजी के पैरों में पड़ गया और उसने अपनी इस परेशानी को दूर करने की विनती करने लगा।

शिवजी ने कहा, ''सिवाय अपना स्त्रीत्व दूर करने के, कुछ और माँगो।''

किन्तु हल को कोई और वर माँगना कहाँ से सूझता? तब उसने पार्वती से प्रार्थना की। पार्वती को उस पर दया आई। उन्होंने उसे वर दिया कि वह एक माह तक स्त्री रहे और एक माह पुरुष बन जाए। और जब वह स्त्री रहे, तब अपने पुरुष होने के समय की घटनाएँ उसे याद न रहें और पुरुष होने पर स्त्री होने के समय की। हल, हला बन गई। उसके सैनिक भी स्त्री बन गए और वे सभी यथेच्छ जंगल में घूमने-फिरने लगे।

उस पर्वत के पास, एक जलाशय था। चन्द्र का पुत्र बुध वहाँ आश्रम बनाकर रहता और तपस्या करता था। बुध युवा और अतीव सुन्दर था।

एक दिन हला और उसके साथ की स्त्रियाँ उस जलाशय में उतरकर पानी को किल्लोलित करने लगीं। बुध ने उन्हें देखा और वह हला पर मुग्ध हो गया। उसे लगा कि तीनों लोकों में हला

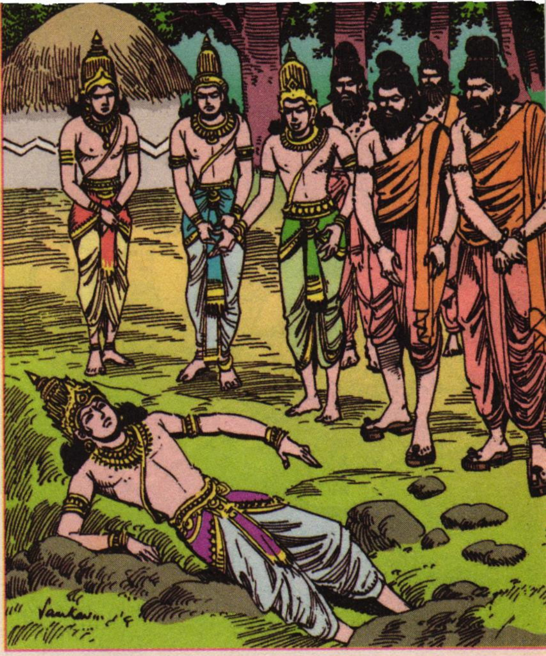

से सुन्दर कोई और स्त्री न होगी।

उसने हला के साथ की कुछ स्त्रियों को अपने आश्रम में बुलाया और पूछा, ''वह कौन है और इस प्रान्त में क्यों आई है, सच बताओ।''

''वह हमारी नायिका है। उसका कोई पति नहीं है। वह हमें साथ लेकर यूँ ही सारा जंगल घूम रही है।'' उन स्त्रियों ने बुध को बताया।

''तुम सब यहीं आश्रम में रहो और कन्द-मूल फलों से अपना जीवन-यापन करो। यहाँ के किंपुरुष तुम्हें अपना लेंगे और तुमसे विवाह करके तुम्हारे पति बन जाएँगे।''

फिर बुध ने हला से कहा, ''मैं चन्द्र का पुत्र बुध हूँ। यदि तुम यहीं रह जाओ, तो मैं तुम्हें भक्ति और स्नेह से देखूँगा।''

''जैसा तुम चाहो,'' हला ने कहा। दोनों ने खुशी-खुशी एक महीना बिताया। एक दिन सवेरे हला, हल महाराज के रुप में बिछौने से उठी। इस बीच क्या हुआ उससे याद ही नहीं था।

जलाशय में बुध हाथ उठाकर तपस्या कर रहा था। हल ने उसे देखकर कहा, ''मैं अपने सैनिकों के साथ यहाँ आया था। अब वे सब कहाँ चले गए हैं, कुछ पता नहीं लगता।''

''हे राजन्, कुछ ऐसा आँधी- पानी आया था कि तुम्हारे सैनिक मर गए और तुमने स्वयं आश्रम में शरण ले ली थी। तुम यहाँ आराम से रह सकते हो।''

अपने सैनिकों के बारे में सुनकर हल बड़ा दुखी हुआ। उसने कहा, ''अब मुझमें राज्य करने की लालसा नहीं रही। यदि आप अनुमति दें, तो मैं अपने बड़े पुत्र शशिबिन्दु का राज्याभिषेक करके तुरन्त वापस आ जाऊँगा।''

''महाराज हल, तुम इतने चिन्तित क्यों हो? तुम यहाँ एक वर्ष तक रहो। मैं तुम्हारा कल्याण करुँगा,'' बुध ने कहा। हल इसके लिए तैयार हो गया।

एक मास तक स्त्री और एक मास तक पुरुष के रुप में हल बुध के साथ रहा। स्त्री के रुप में रहते हुए उसने बुध के पुत्र को भी जन्म दिया।

फिर बुध ने संवर्त, च्यवन, प्रमोद, दुर्वासा आदि अन्य ऋषियों को बुलाया, उनसे हला का परिचय कराया और उसे यथापूर्वक बना देने का उपाय पूछा। तभी हल के पिता कर्दभ और कुछ अन्य मुनि भी वहाँ आ पहुँचे। सभी ने अपनी समझ से उपाय बताए, किन्तु कर्दभ के कहा, ''हल का भला करने का एकमात्र उपाय अश्वमेध यज्ञ ही है।'' उनकी सलाह पर सबने मिलकर अश्वमेध यज्ञ किया। महाराज हल का स्त्रीत्व जाता रहा। यज्ञ की पूर्णहुति पर स्वयं शिव प्रकट हुए और उन्होंने हल को अनुगृहीत किया।

परन्तु फिर हल बह्लीक देश वापस न गया। वह मगध देश में प्रतिष्ठान पर राज्य करता रहा और बह्लीक पर उसके पुत्र शशिबिन्दु का शासन रहा। बुध से हला को हुए पुत्र का नाम पुरुरव था। वह हल के बाद प्रतिष्ठान का राजा बना।

यह वृत्तान्त सुनने-सुनाने के बाद राम ने अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया। उन्होंने अपने पुरोहित वशिष्ठ, वायुदेव, जबालि आदि को बुलाया और अश्वमेध यज्ञ करने की इच्छा जताई। राम की इच्छा जानकर ये सभी विद्वजन बहुत प्रसन्न हुए।

यज्ञ की तैयारियाँ जोर-शोर से आरम्भ हो गईं।

लक्ष्मण ने दूतों के हाथ किष्किन्धा में सुग्रीव और लंका में विभीषण को सपरिवार आकर यज्ञ में भाग लेने का निमन्त्रण भेजा। राम के सभी हितैषियों को निमन्त्रण पत्र भेजे गए।

कई देशों से ब्राह्मण, ऋषि, गृहस्थ, गायक, नट और नर्तक बुलाए गए।

गोमती नदी के तट पर नैमिष वन में यज्ञशाला बनाई गई। हज़ारों गाड़ियों में धान्य, नमक, चन्दन और करोड़ों का सोना लाया गया। रसोइयों और कारीगरों का पार नहीं था।

श्री राम के अन्तःपुर से उनकी माताएँ और सोने की सीता भरत के साथ यज्ञ स्थल पर आईं। निमन्त्रितों के रहने की व्यवस्था अलग से थी।

इधर तो ये व्यवस्थाएँ चल रही थीं, उधर महाराज राम ने एक घोड़ा छोड़ा। उसके साथ ऋषियों और लक्ष्मण को भेजा। लक्ष्मण के साथ राम की चतुरंगिणी सेना भी अपार संख्या में थी। अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को यदि कोई रोकता, तो इसका अर्थ यह होता कि वह यज्ञ कर रहे राजा की शक्ति को चुनौती दे रहा है। ऐसा प्रयास करने वाले राजा को राम की सेना के साथ युद्ध करना होता।

यज्ञ के दर्शन के लिए आए राजा राम के लिए उपहार आदि लाए थे। उनकी आवभगत भरत और शत्रुघ्न ने की। ब्राह्मणों का स्वागत सुग्रीव के वानरों ने और ऋषियों का सत्कार विभीषण के राक्षसों ने किया।

यज्ञ बड़े वैभव के साथ सम्पन्न हुआ। किसी को ऐसा को ऐसा न लगा जैसे कहीं कोई त्रुटि रही हो। भोजन के समय, इससे पहले कि लोग माँगते, उनकी पसन्द की चीज़ें उनकी पत्तल पर आ जातीं। क्या स्वर्ण, क्या धन, क्या रत्न, क्या वस्त्र, जिसने जो चाहा उसे दे दिया गया। इन चीज़ों के ढेर लगे थे और रात-दिन वे लोगों में बाँटे जा रहे थे।

सभी को काम बँटे हुए थे। वानर और राक्षस याचकों को धन, वस्त्र आदि देने के काम में लगाए गए थे। राज्य के कर्मचारी और स्वयंसेवक आगन्तुकों को यज्ञस्थल की जानकारी देने, उन्हें आने-जाने का मार्ग दिखाने के लिए नियुक्त थे।

भोजनशाला का प्रभार राम ने अपने कुशल मन्त्री को सौंपा था, जो हर दिन बनने वाले पकवानों की सूची तैयार करने के साथ समस्त सामग्री की जाँच-परख करते और भोजन के स्वादिष्ट और स्वास्थ्यप्रद होने का विशेष ध्यान रखते। समस्त प्रजा पूरे यज्ञकाल के लिए आमन्त्रित की गई थी और यज्ञ चलने की अवधि तक किसी घर में भोजन नहीं बना।

एक वर्ष तक चलने के पश्चात इस महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। ऐसा कहा गया कि ऐसा यज्ञ तो पृथ्वी पर न कभी दंड ने करवाया था, न कुबेर ने और न यम ने ही।

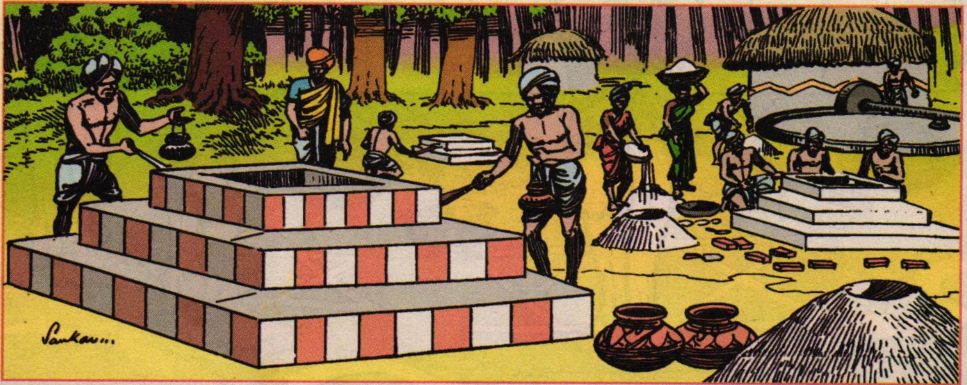

पंचतंत्र

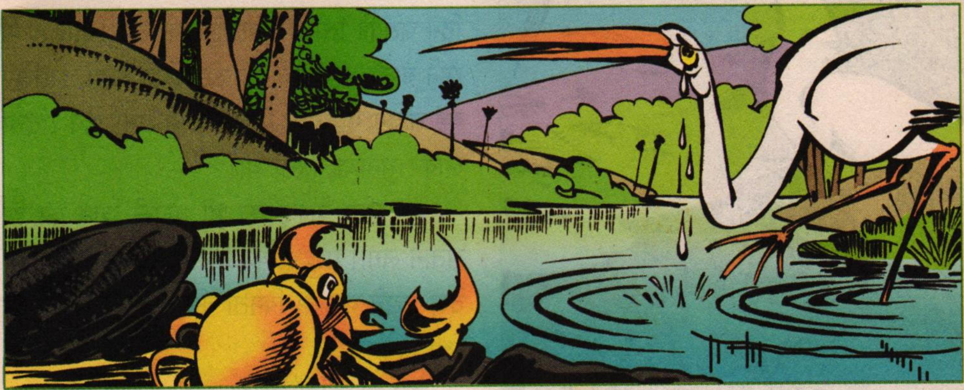

सियार ने कौए को बक और केकड़े की कहानी यों सुनाई :

बक और केकड़े की काहनी

एक तालाब के किनारे एक बक निवास करता था। वह बूढ़ा हो गया था, इसलिए उसने विशेष श्रम के बिना मछलियाँ खानी चाहीं। वह पानी के किनारे विरक्त मन से खड़े हो समीप आयी हुई मछलियों को खाता न था।

मछलियों के साथ एक केकड़ा भी था।

उसने बक निकट जाकर पूछा "मामा, लगता है, आप ने आज खाना-खेलना बंद कर दिया है। ऐसा क्यों?"

इस पर बक ने समझाया - "बहुत समय तक मछलियाँ खाकर आराम से मैने अपनी जिंदगी बितायी। मछलियाँ मेरी मित्र हैं। तुम लोगों पर एक बड़ी विपत्ति आने वाली है। इस बुढापे में मैं सुख से दूर होता जा रहा हूँ। यही मेरी सबसे बड़ी चिंता है।"

"मामा, वह कैसी विपत्ति है?" केकड़े ने पूछा।

"आज सुबह कुछ मछुओं के बात करते सुनाः यह एक बड़ा तालाब है। इसमें कई मछलियाँ हैं। इतवार के शाक तक बाकी चारों तालाबों में शिकार खेलना समाप्त करके सोमवार सवेरे यहाँ आ जाएंगे। हमने जो नये जाल तैयार किये हैं, उनसे मछलियों और अन्य जलचरों को फँसायेंगे । इसलिये एक सप्ताह के अन्दर इस तालाब में एक मछली या अन्य जलचर नहीं बचेगा। आज सोमवार है न? इस बुढापे में मेरे मुँह का कौर भी चला जा रहा है।" बक ने कहा।

बक की कपट पूर्ण बातें सुनकर तालाब की मछलियाँ और अन्य प्राणी भय के मारे काँप उठे। उन सब ने अपनी आयु ओहदे का ख्याल रखते हुए बक का 'पिता, दादा, नाना, मामा, भाई, मित्र और गुरु का संबोधन करते कहा -"अच्छा हुआ कि आप ने हमें इस खतरे की सूचना पहले ही दे दी। इस खतरे से हमें बचाना आप के लिए कीी असंभव बात न होगी।"

"मैं अंडज हूँ, मानव पिंड है, भला मैं उनके

मित्र भेद - ८

साथ स्पर्धा कैसे कर सकता हूँ? फिर भी मेरे मन में एक विचार आ रहा है । तुम सब सहयोग दोगे तो मेरा प्रयत्न सफल हो सकता है। यहाँ से थोड़ी दूर पर एक बड़ा मंदिर है। मंदिर के पास एक तड़ाग है। उसमें कमल भरे हुए हैं। उस तड़ाग में मछलियाँ पकड़ना मना है। वहाँ पर तुम लोग सुरक्षित रह सकते हो! एक एक छोटे दल के रुप में तुम सबको अपनी पीठ पर ले जाकर मैं वहाँ पहुँचा सकता हूँ।'' बक ने समझाया।

ये बाते सुन मछलियाँ खुशी से उछल पड़ीं । सब ने बक के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। बक भी मन ही मन मुस्कुरा उठा। उसने सोचा कि इस प्रकार मछलियों को आसानी से खाया जा सकता है। यह सोचकर उस पापी बक ने मछलियों की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

इसके बाद बक मछलियों के एक एक दल को अपनी पीठ पर चढाकर मंदिर के तड़ाग की ओर चल पड़ा। पर वह तड़ाग के पास नहीं गया। एक पहाड़ी चट्टान पर उतरकर सब मछलियों को चट्टान पर डाल दिया और सबको खाता गया। दिन ब दिन उसकी प्रसन्नता बढती जाने लगी। तालाब में रहने वाली मछलियों को कोई संदेह न हो, इसलिए वह तड़ाग में आयी मछलियों से प्रति दिन संदेशा लाकर सुनाया करता था।

इस बीच केकड़े को भी अपनी जान का डर सताने लगा। मछुओं के आने का दिन निकट पड़ते देख उसने बक से विनती की - ''मामा, मेरी भी रक्षा करो न?''

रोज मछलियाँ खाकर बक भी ऊब चुका था। उसने सोचा कि अब उसे नया आहार मिलनेवाला है, यह सोचकर उसने केकड़े को अपनी पीठ पर बैठाया और उड़ते जाकर पहाड़ी चट्टान पर उतरने को हुआ।

''मामा, मंदिर कहाँ? गहरा तड़ाग कहाँ पर है?'' केकड़े ने बक से पूछा।

बक ने व्यंग्यपूर्वक कहा - ''उस चट्टान को देखते हो न? उस पर मेरे द्वारा लाई गयी सभी मछलियाँ शाश्वत रूप से शांति प्राप्त कर चुकी हैं।''

केकड़े ने बक की बाते सुनते ही झाँककर देखा। चट्टान पर मछलियों की हड्डियाँ फैली हुई हैं। तब उसने अपने मन में सोचा - ''इस दुनिया में अक्लमंद लोग अपने स्वार्थ के वास्ते मित्र होकर भी शत्रु के रूप में, शत्रु होकर मित्रों के रूप में अभिनय करते है। शत्रु होकर भी मित्रों जैसे अभिनय करनेवालों से मैत्री करने की अपेक्षा सांपों से मैत्री करना कहीं अच्छा है। बक ने इसके पहले सारी मछलियों को हजम कर डाला है। ये सब उन्ही मछलियों की हड्डियाँ हैं। उनके वास्ते बदला लेने का यही अच्छा मौका है।''

बक चट्टान पर उतरने ही वाला था कि तब केकड़े ने उसे चट्टान पर गिराने के पहले ही बक के गले को जोर से कस लिया। उस हालत में बक केकड़े का कुछ बिगाड़ न सका। बक वहाँ से उड़ने को हुआ, तब केकड़े ने बक के कंठ को अपने तेज नाखूनों से इस तरह जोर से दबाया कि बक का कंठ फट गया।

इसके बाद केकड़ा बक का सिर लेकर तालाब के पास लौट आया। वहाँ पर बची हुई मछलियों ने केकड़े से पूछा - ''भाई साहब, तुम क्यों लौट आये हो?''

केकड़े ने मछलियों को बक का सिर दिखाते हुए कहा - ''इस दुष्ट ने हम सबको दगा दे दिया है। इस पापी की बातों में आकर बेचारी सारी मछलियाँ अपनी जान खो बैठी हैं। मैं इस विश्वासघात को मारकर उसका सिर लाया हूँ। मछुओं के आकर हमें जाल मं फँसाने की बात सब झूठी है। अब हम आराम से यहाँ पर रह सकते हैं।''

सियार के मुँह से यह कहानी सुनकर कौए ने कहा - ''मित्र, यह बताओ कि सांप को कैसे मार डाला जाए?''

सियार ने यों कहाः ''तुम किसी मंदिर या तालाब के पास जाओ। धनियों का कोई रत्नाहार या कोई कीमती आभूषण ले आओ। लोग तुम्हारा पीछा करेंगे। उनके देखते तुम उस आभूषण को सांप की बांबी में गिरा दो। वे लोग उस आभूषण के वास्ते बांबी को खोद डालेंगे। तब सांप बाहर निकलेगा, लोग उसे मार डालेंगे।''

कौए उड़कर राजमहल के तड़ाग के पास पहुँचे। थोड़ी देर में रानी नहाने तड़ाग के पार आ पहुँची। उसने अपने गहने निकालकर किनारे पर रख दिया और तड़ाग में उतरकर नहाने लगी। मादा कौआ झट रत्नहार को लेकर अपने घोंसलेवाले पेड़ की ओर धीरे से उड़ने लगी। इसे देख राजमहल के नौकर जोर से चिल्लाते लाठियाँ लेकर उसके पीछे दौड़ पड़े।

मादा कौए ने रत्नहार को सांप की बांबी में गिरा दिया और वह पेड़ की एक डाल पर बैठे तमाशा देखने लगी। राजमहल के नौकरों ने रत्नहार के वास्ते बांबी को खोद डाला। सांप गुस्से में आकर बांबी से बाहर आया। सब ने मिलकर सांप को मार डाला और रत्नहार को लेकर राजमहल की ओर चले गये।

इस तरह कौए सांप की मुसीबत से बचे रहे।

चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - १८

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by Infosys FOUNDATION, Bangalore

सही उत्तर देने वाली प्रविष्टियों में से एक को २५० रुपये का इनाम दिया जाएगा।*

***यदि सही प्रविष्टियों की संख्या एक से अधिक हो तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।**

तुम्हें क्या करना है:

१. एक कागज पर उत्तर लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१८** लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर जुलाई ३० मई तक मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर सितम्बर २०१० के अंक में प्रकाशित होंगे।

पौराणिक कथाओं के बारे में!

१. किस महाकाव्य में वेदश्रुति का वर्णन है?

२. द्रोणाचार्य की पत्नी और पुत्र का नाम क्या था?

३. गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या को उनके श्राप से किसने मुक्त करवाया था?

४. पांडवों और कौरवों के पितामह का नाम क्या था?

५. बलराम की माता का नाम क्या था?

६. रामायण में रावण को सीता का अपहरण करने से रोकने का प्रयास किसने किया था?

७. विष्णु के कितने अवतार हैं?

८. हिन्दू पौराणिक कथाओं में, मृत्यु के देवता कौन हैं?

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१६ मई २०१० उत्तर:

१. क्रिप्टन, २. एक रेडियोधर्मी मकड़ी के काटने से, ३. द इनक्रेडिबल हंक का, ४. स्पाइडरमैन, ५. झूठ पकड़ने में उसकी मदद करती है, ६. ज़ेना, ७. हेलेना, ८. क्लार्क केन्ट, ९. हीथ लेजर.

नोट: कोई भी पूर्णतः सही प्रविष्टि नहीं मिली अतः किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

सुडोकू पहेली

नीचे दी गई दो सुडोकू पहेलियाँ हल करें और अपनी प्रविष्टियाँ भेजकर जीतने के अवसर पाएँ।

रिक्त स्थानों को १ से ९ तक के अंकों से भरें। प्रत्येक पंक्ति, कॉलम और ३ X ३ के वर्ग में एक अंक अवश्य होना चाहिए। पहेलियों के उत्तर सितम्बर'१० के अंक में प्रकाशित किए जाएँगे। सही परिणामों वाली प्रविष्टियों को रु. ५०० का पुरस्कार दिया जाएगा।

पहेली-1

					7	6		
3			1	2			9	7
5	6							
8		6		1				
7	9					4		5
				6			7	
6	7		3					4
		9			8			
			2			3		6

पहेली-2

	4							
			9					1
	8	5		7				9
					1			4
	7			5			6	
9			2					
				6		8	7	
2					3			
8							5	

अपनी प्रविष्टियाँ २५ जुलाई २०१० से पहले इस पते पर भेज दें:

Editor, SUDOKU PUZZLE, CHANDAMAMA INDIA LTD.,

B-3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

e-mail your entries to:contests@chandamama.com

मई २०१० का सही जवाब ये रहा:

पहेली-1

3	6	7	9	2	8	1	5	4
5	9	2	1	4	3	7	8	6
1	8	4	5	7	6	3	9	2
6	1	8	2	3	7	5	4	9
2	4	9	6	1	5	8	3	7
7	5	3	8	9	4	2	6	1
8	7	5	4	6	1	9	2	3
9	3	6	7	5	2	4	1	8
4	2	1	3	8	9	6	7	5

आप सभी की प्रविष्टियों के लिए धन्यवाद। क्योंकि कोई सही प्रविष्टियाँ नहीं मिलीं, अतः मई '१० के अंक के लिए कोई पुरस्कार नहीं दिए जाएँगे।

पहेली-2

8	9	5	6	4	7	1	3	2
3	2	6	9	5	1	8	4	7
4	1	7	3	8	2	9	5	6
9	7	8	2	6	5	4	1	3
1	5	4	7	9	3	6	2	8
2	6	3	8	1	4	7	9	5
6	8	1	5	3	9	2	7	4
7	3	9	4	2	6	5	8	1
5	4	2	1	7	8	3	6	9

माचिस का राइडर

जैसे-जैसे आप अपने हाथ को घुमाएँगे, यह माचिस का खिलौना अपनी धागे से बनी रेल पर चलेगा।

आपको क्या चाहिए:

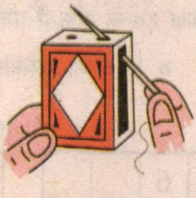

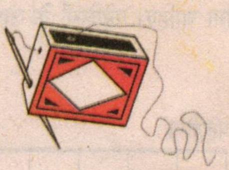

- खाली कार्डबोर्ड माचिस
- मज़बूत धागा
- बड़ी सुई

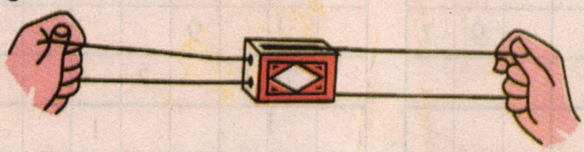

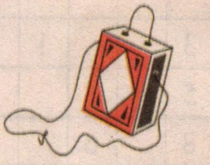

कैसे करें:

- माचिस में चार छेद करो - दो ड्रॉअर में और दो जलाने वाली सतहों पर।
- १.५ मीटर लंबे धागे के साथ एक सुई लो। इस सुई को जलाने वाली सतह के छेद से ड्रॉअर के छेद तक पिरो दो।
- सुई को यहाँ दिखाए अनुसार दूसरे छेदों में पिरो दो। धागों वाली माचिस तैयार है।
- इस प्रणाली को पूरा करने के लिए धागे के दोनों सिरों को बाँध दो।
- धागे को दोनों हाथों में पकड़ो। माचिस को दाईं ओर खिसकाओ। बाएँ हाथ को घुमाओ और मोड़ो। माचिस धागे पर तुम्हारे बाएँ हाथ की ओर चलेगी।
- तुम इसपर किसी जानवर का चित्र भी चिपका सकते हो और उसे इधर-उधर फुदकता देखकर आनन्द ले सकते हो। यह प्रणाली केवल एक दिशा में चलती है और इसे बाएँ हाथ के छोर तक चले जाने पर तुम्हें इसे वापस लाना पड़ेगा।

सिद्धान्त:

जब हम ऊपर के धागे को खींचते हैं, तो माचिस ऊपर की ओर झुकती है और घर्षण की वजह से उसी स्थिति में रह जाती है। यह निचले धागे के सहारे नीचे आती है। इसी प्रकार, जब हम निचले धागे को खींचते हैं तो माचिस नीचे झुकती है और फिर से बाईं ओर चलती है, लेकिन इस बार ऊपरी धागे पर।

यह पृष्ठ, पूना के इंटर-यूनिवर्सिटी सेन्टर फ़ॉर एस्ट्रॉनॉमी एण्ड एस्ट्रोफ़िज़िक्स में अतिथि वैज्ञानिक, श्री अरविन्द गुप्ता ने लिखा है।

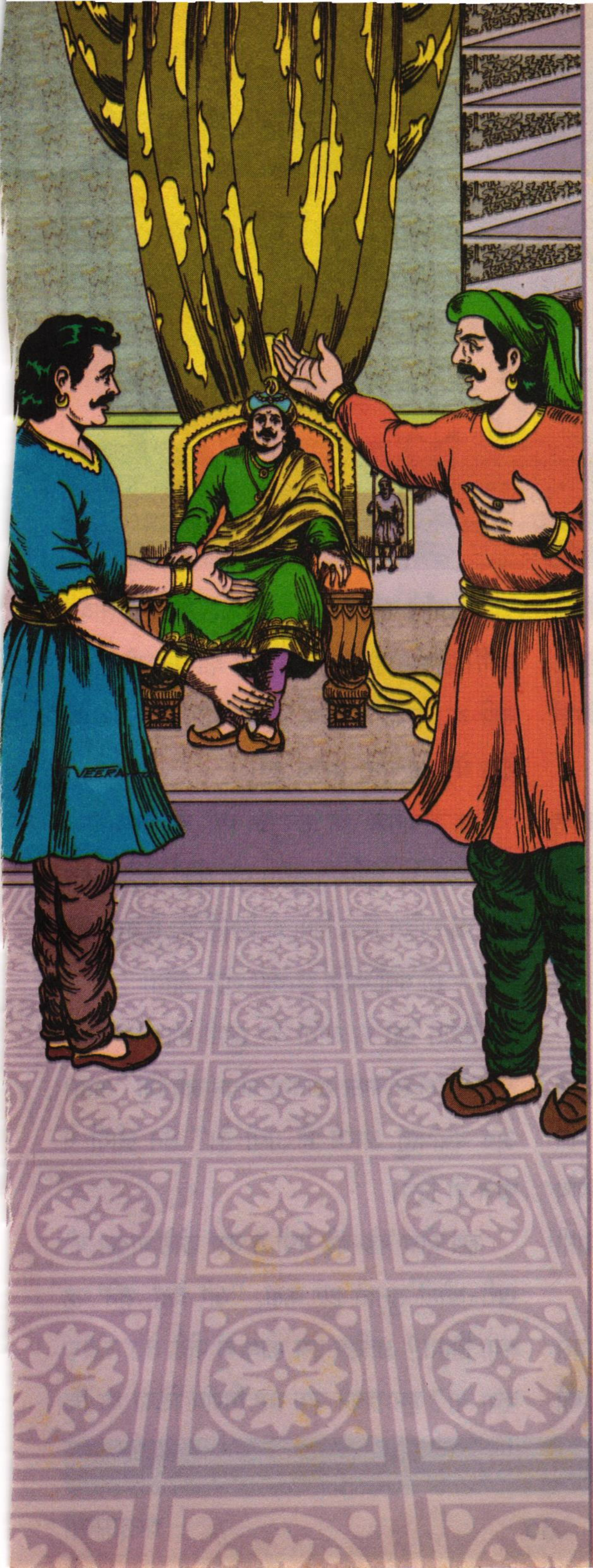

आत्माहुति

धर्मगिरी के राजा के खजाने में एक बार एक हज़ार स्वर्ण मुद्राओं की चोरी हो गई। चोर को पकड़ने की जिम्मेदारी राजा ने युक्तिवर्मा को सौंप दी। साथ-साथ राजा ने इस काम के लिए एक शर्त भी रखी - दूसरे दिन सूर्यास्त के पहले युक्तिवर्मा चोर को न पकड़ पाए, तो उसे बिना संकोच के आत्माहुति करनी होगी।

युक्तिवर्मा ने राजा की शर्त को मंजूर करते हुए कहा - ''महाराज, यदि मैं चोर को न पकड़ सका, तो मेरी आत्माहुति के बाद उसके एक मंत्र का पद देना होगा। क्योंकि चोरी करने के बाद मुझ जैसे व्यक्ति के हाथ जो बन्दी न बना, तो निश्चय ही व महान् बुद्धिशाली होगा।''

दूसरे दिन जब सूर्यास्त होने में कुछ ही समय बाकी था, दरबार में बैठे राजा से युक्तिवर्मा ने नम्र निवेदन किया - ''महाराज, मैं चोर की बन्दी नहीं बना पाया। अतः मैं आत्माहुति करने जा रहा हूँ। जैसा कि मैंने आप से अनुरोध किया था, आप चोर को मंत्री बना दीजिए, ताकि मेरी आत्मा को शांति मिले।''

यह सुनकर कोषाधिकारी हौसले के साथ उठ खड़ा हुआ और उस ने राजा को प्रार्थना की - ''महाराज, तब तो आप मुझे ही मंत्री का पद दीजिएगा !''

अब क्या था, राजा ने भटों को आदेश देकर कोषाधिकारी को बन्दी बना दिया। युक्तिवर्मा की भूरी-भूरी प्रशंसा कर उस का सम्मान किया। मंत्री युक्तिवर्मा ने राजा की खूब सहायता की।

छोटा बादल

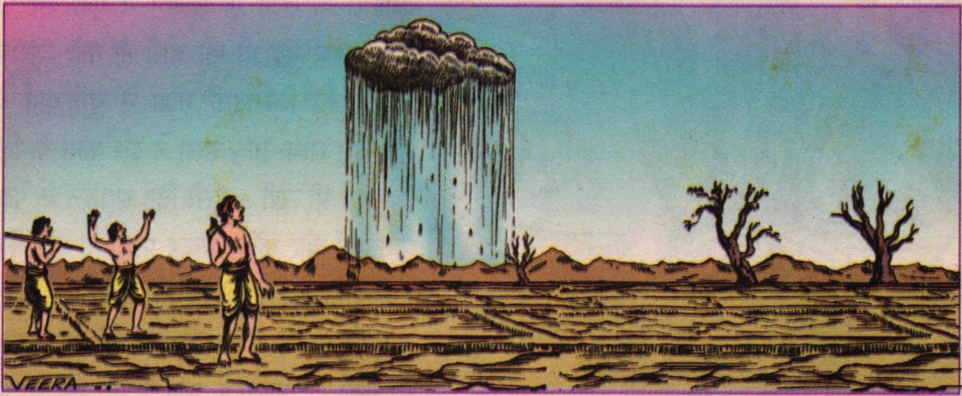

त्रिगर्त देश के सभी निवासी कृषक ही थे। वहाँ की प्रजाओं का सुख-सन्तोष वरुणदेव एवं उनके द्वारा भेजे जानेवाले मेघों पर ही निर्भर रहता था। त्रिगर्त देश धन-धान्य से भरपूर था।

त्रिगर्त की प्रजा बड़ी धर्मनिष्ठ थी। वह अनेक देवी-देवताओं की पूजा किया करती थी। पर न जाने क्यों, वह वरुण देव एवं मेघों की आराधना नहीं करती थी। कुछ साल बाद मेघ उस देश की प्रजाओं से एकदम असन्तुष्ट हो उठे।

एक बार की बात है। दूरवर्ती किन्हीं प्रदेशों में मेघराज ने मेघों की एक सभा बुलायी। सारे मेघ एकत्रित हुए और फिर सर्व सम्मति से यह निर्णय लिया गया कि त्रिगर्त देश पर किसी मेघ को पानी नहीं गिराना चाहिए।

इस निर्णय के परिणाम स्वरूप त्रिगर्त में उस वर्ष वर्षाऋतु में भी पानी नहीं बरसा। वहाँ की प्रजाएँ आँखे फाड़-फाड़कर आकाश की ओर ताकने लगीं। आसमान में दूर तक मेघ का एक भी टुकड़ा नहीं था। प्रजा व्याकुल रहने लगी। उनकी व्यथा देख मेघ अत्यन्त प्रसन्न हुए।

पर अचानक एक दिन उन मेघों की प्रसन्नता में एक विघ्न आ उपस्थित हुआ। एक छोटा बादल अन्य मेघों को सूचित किये बिना ही त्रिगर्त देश में गया और थोड़ी - सी वर्षा करके चुपचाप लौट आया।

त्रिगर्त देश के लोगों की खुशी का पारावार न रहा। वे यह सोचकर आनन्द मनाने लगे कि "अहा! अब वर्षाऋतु आरंभ हो गयी है।" उन लोगों ने बीज बो दिये।

इस बीच बड़े-बड़े मेघों ने उस छोटे बादल को खरी-खोटी सुनाते हुए कहा, "अरे बेटा, तूने यह क्या किया? आखिर इस काम के पीछे तेरा उद्देश्य क्या था? हम सबने जब यह निर्णय लिया था कि

त्रिगर्त देश पर पानी की एक बूंद भी नहीं बरसनी चाहिए, तब तू त्रिगर्त देश पर जाकर अपना जल क्यों बरसा आया?''

''मेघोंदादा, आप लोग मुझे व्यर्थ ही मूर्ख समझ रहे हैं, पर मैने थोड़ी-सी रिमझिम करके त्रिगर्त देश के लोगों के बचाकर रखे हुए बीजों को मिट्टी में मिलवा दिया है। क्या यह छोटी-सी बात भी आपकी समझ में नहीं आयी?'' छोटे बादल ने कहा।

इसके बाद त्रिगर्त देश की प्रजा की दुर्दशा को देखने के विचार से सारे बड़े मेघ खुश होते हुए उस देश की ओर चल पड़े। वहाँ की प्रजा में त्राहि-त्राहि मची हुई थी सारे लोग मेघों की ओर टकटकी बांधकर देखते तथा वरुणदेव एवं मेघों को प्रणाम कर विलाप करते।

उस देश की प्रजाओं की यह दुरवस्था देखकर बड़े बादलों का दिल पसीज उठा। वे छोटे बादल को डपटकर बोले, ''अरे बच्चे, तुम बड़ों से कहे बिना इस तरह की शरारत मत किया करो।''

इसके बाद सब मेघ उमड़ पड़े और उन्होंने त्रिगर्त देश पर मूसलाधार वर्षा की चहुँ ओर सुख छाया ही, मेघों को भी बड़ा संतोष मिला।

त्रिगर्त देश की प्रजाओं को इस बात का अनुभव हुआ कि वरुणदेव और मेघों ने उनकी प्रार्थना सुनी। तब से वहाँ के लोग बराबर वरुणदेव एवं मेघों की पूजा करने लगे। इसके बाद त्रिगर्त देश में कभी अकाल नहीं पड़ा। वहाँ की भूमि सदा शस्य श्यामला बनी रही।

पर यह बात बूढ़े बादल नहीं समझ पाये कि इस सारी घटना का श्रेय छोटे बादल को है। अगर यह अयाचित रूप में थोड़ा-सा पानी बरसाने की शरारत नहीं करता, तो बड़े मेघ अपने निर्णय पर अटल रहकर कभी पानी नहीं बरसाते। छोटे बादल के द्वारा पानी पाकर त्रिगर्त के लोग जो अपनी फसल बो चुके थे, उसके नष्ट होने की संभावना से और अधिक दीन हो उठे और उन्होंने वरुणदेव एवं मेघों की आराधना आरंभ की। बड़े मेघों की डांट-डपट सुनकर छोटा बादल चुप रह गया। वह यह नहीं समझ पाया कि वह एक बडे काम का निमित्त बना है।

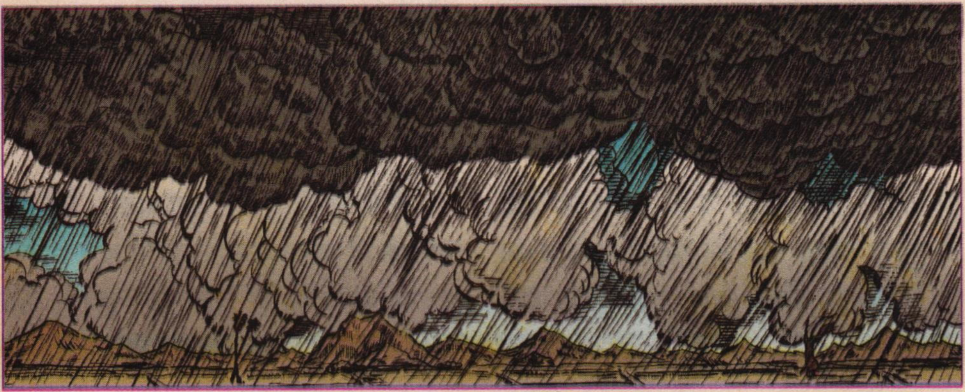

छोटी बहन और चाँद

एक ठंडी शाम को रमा और उमा बातें कर रही थीं। उनका ध्यान उगते हुए चाँद की ओर नहीं गया था। चन्द्रमा बादलों के पीछे से झाँक रहा था। अचानक उमा की नज़र उसपर पड़ी। वह शाम तो आम शामों की ही तरह थी, लेकिन उमा उस दिन को याद करके थर्रा गई। और तुरन्त ही वह हँस पड़ी जैसे कोई चुटकुला याद आया हो। रमा कुछ समझी नहीं। उसने अपनी सहेली की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। अपनी सहेली के मुस्कुरा देने पर उसने राहत की साँस ली।

"मैं तुम्हें बताती हूँ क्या हुआ था," उमा ने कहा।

"बीस साल पहले, इसी तरह एक शाम मैं अपने आँगन की सीढ़ियों पर बैठकर चन्द्रमा की ओर देख रही थी। मुझे चाँद देखना बहुत पसन्द है। यदि मैं किसी पड़ोसी के घर से आ रही होती तो मुड़कर देखती रहती कि चन्द्रमा मेरे पीछ आ रहा है कि नहीं। यदि मैं अपनी दादी के गाँव जाती तो बस की खिड़की से पूरे समय चाँद को देखती, और सोचती कि वह इतनी दूर तक पीछे-पीछे कैसे आ जाता था। मुझे लगता था कि यदि मैं किसी ऊँचे पेड़ पर चढ़ जाऊँ तो चाँद तक पहुँच सकती हूँ। मुझे यह तो पता था कि अपनी छत पर चढ़कर मैं उस तक नहीं पहुँच सकती, लेकिन फिर लगता था कि शायद किसी पहाड़ पर चढ़कर मैं उस तक पहुँच जाऊँ। हालाँकि मुझे पता था कि चन्द्रमा हमसे बहुत दूर है, फिर भी यह सोचकर अच्छा लगता था कि शायद मैं उस तक पहुँच सकूँ।"

"अगर तुम्हें चाँद इतना ही पसन्द है तो अभी ऐसी कौन सी याद आई जिससे तुम थर्रा गईं?" रमा ने पूछा।

"मैं बताती हूँ, सुनो।" उमा बोली। "मेरा बड़ा भाई मुझे मेरे और चन्द्रमा के बारे में बहुत चिढ़ाता था। वह कहता था कि "सूरजमुखी सूरज के पीछे

गोदावरी ललिता

चलता है और मेरी छोटी बहन चन्द्रमा के पीछे चलती है।'''

''बात तो सही लगती है!'' रमा ने हँसकर कहा।

उमा भी खुद को मुस्कुराने से नहीं रोक पाई। फिर उनसे कहा, ''कुछ देर बाद, मैं कुएँ के पास गई और उसमें झाँका। मैं कुएँ में चन्द्रमा की परछाईं देख रही थी और कल्पना कर रही थी कि चन्द्रमा उसके पानी की सतह पर तैर रहा है। अचानक मैंने एक ज़ोर की आवाज़ सुनी! मेरे दिल की धड़कन रुक सी गई। तुरन्त दौड़कर वापस गई और क्या देखती हूँ? मेरा भाई, जो आंगन में बैठकर कोई किताब पढ़ रहा था, वहाँ दिखाई नहीं दे रहा! किताब ज़मीन पर पड़ी थी और कुर्सी भी औंधी पड़ी थी।

मेरे मम्मी-पापा किसी काम से बाहर गए थे। उन्हें वापस आने में काफ़ी समय लगने वाला था। मैं अपने भाई को पुकारती हुई पूरे घर में उसे ढूँढने लगी। मैं अपने पड़ौसियों को बुलाने ही वाली थी कि अचानक खिड़की में से चाँद चमका और मैंने आदत के मुताबिक उधर देखा। और उसी समय खिड़की के पास के काँच में मुझे उसका प्रतिबिंब दिखा। मेरा भाई छज्जे में छुपा था और वहाँ के परदे के पीछे से झाँक रहा था। मुझे उसका पता लग गया।'' इतना कहकर उमा रुकी।

''बस यही बात थी?'' रमा ने पूछा।

''नहीं, सुनो तो!'' उमा आगे सुनाने लगी।

''मैंने चन्द्रमा को अपने भाई की छुपने की जगह बता देने के लिए धन्यवाद किया और उसे पुकारती हुई आँगन में चली गई। मुझे वह बड़ा-सा पत्थर दिखाई दिया जिससे भाई ज़ोर की आवाज़ करता था। मैंने उसे कुएँ तक लुढ़काया और धीर से उठाकर 'भैया' चिल्लाते हुए ज़ोर से छपाक की आवाज़ के साथ कुएँ में डाल दिया।'' मेरा भाई तेज़ी से दौड़ता हुआ घर से बाहर कुएँ तक आ गया जहाँ मैं खड़ी थी...मुझे ज़ोर से हँसी आ गई।''

उमा के इस प्रकार कहानी खत्म करते ही रमा भी हँसने लगी।

''चन्द्रमा ने मुझे तुमको दिया था। अगर वह मदद न करता...'' उनके पीछे कोई बड़बड़ाया। ऊपर आसमान में बादल हट गए और चन्द्रमा तेज़ चमकने लगा, जैसे दिल खोल कर हँस रहा हो।

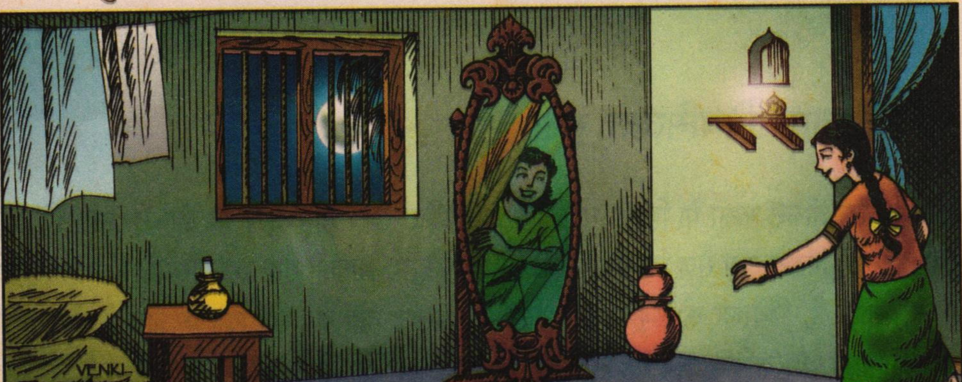

मुक्त आकाश

आपके समक्ष देश भर के बाल रिपोटर्स द्वारा लिखे गए आलेख लाने का वचन निभाने के लिए, नीचे प्रस्तुत है युवा रिपोर्टर्स के लिए डिब्रूगढ़ असम से मूलतः असमिया में प्रकाशित न्यूज़ लेटर मुक्त आकाश का अनूदित रुप।

शिशु पंचायत के हाथ धोने की जागरुकता अभियान संबंधी प्रयास

हाथ धोने की आवश्यक्ता के प्रति जागरुक्ता बढ़ाने की एक पहल के तहत, अलिमुर रुपकुँवर कॉलेजियेट जातीय विद्यालय, अलिमुर आदर्श जातीय विद्यालय और सौमरपीठ उच्च माध्यमिक विद्यालय की बाल पंचायत ने २४ अक्टूबर २००९ को एक अभियान आरम्भ किया। अभियान के एक भाग के रुप में विद्यार्थियों ने रुपकुँवर कॉलेजियेट जातीय विद्यालय से डाइकॉम चाय बागान की लाइन क्रमांक नौ से होकर सोमारपीठ स्कूल तक सुबह ११:३० पर एक जुलूस निकाला। जुलूस में, बच्चों ने निरोगी जीवन के लिए हाथों को धोने की आवश्यकता के बारे में कई नारे लगाए। इस अवसर पर, डाइकॉम चाय बागान में रहने वाले एक भागीदार, दिलीप ओरांग ने कहा कि पहले उन्हें भोजन से पूर्व और शौचालय जाने के बाद साबुन से हाथ धोने का महत्व नहीं मालूम था। एक और विद्यार्थी आमिर पाटौर ने कहा, ''हमने अपने आस-पास के लोगों को ठीक से हाथ न दोने के कारण फैलने वाली बीमारियों के बारे में जागरुक किया और उनसे इन कामों के लिए साबुन का उपयोग करने का आग्रह किया।'' हेमाली घरफालिया नामक छात्रा के अनुसार, ''यदि हम लगातार उनके पास जाकर याद नहीं दिलाएँगे, तो वे अपनी आदतें कभी नहीं बदलेंगे। आखिर पुरानी आदतें बहुत मुश्किल से छूटती हैं।''

- मंजू मिंज, १४ वर्ष

अनियमितता नियमितता बनी

हाल ही तक तीसरी कक्षा के बिरला मुंडा एक अनियमित छात्र माने जाते थे। लेकिन आज स्थिति कुछ और है। बिरला अब रोज़ स्कूल जाते हैं। बिरला की माँ, जोनली मुंडा इस परिवर्तन से बहुत खुश हैं। वे बताती हैं, ''बिरला को स्कूल जाना कभी भी पसन्द नहीं था। वह दिन के बीच में ही स्कूल से भाग जाता था। लेकिन अब यह सब बीते वक्त की बात हो गई है और मैं बहुत खुश हूँ कि वह

स्कूल जाने को पसन्द कर रहा है।" जोनली इसका पूरा श्रेय पास की कल्पना शिशु पंचायत के सदस्यों को देती हैं।

दरअसल मार्च से जून २००९ के बीच स्कूल छोड़ने वाले छात्रों को कल्पना शिशु पंचायत के सदस्यों ने अलिमुर आदर्श जातीय विद्यालय में पढ़ाया था। इस बारे में पंचायत के १४ वर्षीय अध्यक्ष बिरेसन पाटोर ने कहा, "हम प्रति सप्ताह शनिवार शाम दो घंटे और रविवार सुबह तीन घंटे हमारे आस-पास के स्कूल छोड़ चुके बच्चों को पढ़ाते थे। उन्हें असमिया पढ़ाई जाती थी। हमें हमारे प्रधानाचार्य रमेश महिली और एक अन्य शिक्षिका मोनिका शर्मा से भी मदद मिली। लेकिन आगामी अर्ध-वार्षिक परीक्षा को देखते हुए हमें उन्हें पढ़ाना बन्द करना पड़ा।" उन्होंने हमें यह भी बताया कि स्कूल छोड़ने वाले बच्चों में से अधिकांश ने वापस स्कूल जाना शुरु कर दिया है। दुबारा स्कूल जाना शुरु करने वाली बसन्ती ने कहा, "पहले मुझे स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। लेकिन जब बिरेसन और उनके अन्य साथियों ने हमें पढ़ाना शुरु किया, तो मुझे ये पढ़ाई मजेदार लगी। इसलिए मैंने फिर से स्कूल जाना शुरु कर दिया और अब मुझे पढ़ने में मज़ा आता है।"

- नभकीर्ति सिंह, १४ वर्ष

फ़ोकस

"स्कूली शिक्षकों को विद्यार्थियों को सज़ा देने के विरुद्ध चेतावनी"

श्री फटिख चन्द्र डाले के साथ साक्षात्कार

शिक्षा हर बच्चे का मूलभूत अधिकार है। इसके बावजूद, कई बच्चे आज तक शिक्षा पाने से वंचित हैं। इसके अलावा कई बच्चे स्कूल में मिली शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना के कारण मनोवैज्ञानिक रुप से प्रभावित होते हैं। बदलती हुई शिक्षा प्रणाली यह प्रयास कर रही है कि बच्चों के विकास के लिए नई पद्धतियाँ और तौर-तरीके अपनाए जाएँ। इस बारे में अधिक जानने के लिए हमारे बाल पत्रकारों का एक दल स्कूल निरीक्षक श्री फटिक चन्द्र डाले से मिलने गया।

१. वर्तमान में, हमारी शिक्षा प्रणाली शिक्षा में बदलाव कैसे लाती है?

हम अखिल भारतीय प्रणाली अपनाने वाले हैं। सीबीएसई के बोर्ड के कोई विशेष पद्धति अपनाने के बाद एसईबीए कोई निर्णय लेगा।

२. शिक्षा प्रणाली में बच्चों के मूलभूत अधिकार के मुद्दे को शामिल करने के लिए आपने क्या कदम उठाए हैं?

चूँकि शिक्षा बच्चों का मूलभूत अधिकार है, अतः उन्हें १४ वर्ष की उम्र तक मुफ़्त शिक्षा मिलनी चाहिए। इसमें भी, बालिकाओं की शिक्षा पर अधिक ज़ोर दिया जा रहा है।

३. क्या स्कूलों में अब भी मानसिक और शारीरिक सज़ा दिया जाना जारी है? इसे रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

शारीरिक सज़ा शर्म का विषय है। गाँधी जी के स्वप्न को साकार करने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया है कि किसी भी विद्यार्थी को शारीरिक या मानसिक प्रताड़ना नहीं दी जाएगी। अतः, सभी स्कूलों के शिक्षकों को यह चेतावनी दी गई है कि बच्चों को सज़ा न दी जाए। यदि कोई शिक्षक इसका दोषी पाया जाता है तो उसे इसका दंड मिलेगा।

४. बच्चों के सर्वाङ्गीण विकास के लिए आप क्या कर रहे हैं?

सामान्य शिक्षा के अलावा, हम जीवन में सर्वांगीण सफलता के लिए उन्हें आध्यात्मिक शिक्षा भी दे रहे हैं। उन्हें एनसीसी/स्काउट गाइड के तौर पर प्रशिक्षित करने का भी प्रयास जारी है।

धनुर्विद्या में सफलता

डिकम जातीय विद्यालय, डिब्रूगढ़ के पाँच छात्रों ने चोकिर्डिंग मैदान पर ३ से ५ जून के बीच आयोजित की गई जिला स्तरीय ग्रामीण खेल प्रतियोगिता जीतकर अपने स्कूल और क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। लड़कियों के खंड में प्रथम स्थान पाने वाली जुनमनी बरुआ ने कहा, "मैंने प्रथम स्थान की कल्पना नहीं की थी। प्रतियोगिता की तैयारी करते समय मेरे मित्र चाहते थे कि मैं अच्छा प्रदर्शन करूँ।" सातवीं कक्षा की इस १३ वर्षीय छात्रा ने पाँचवीं कक्षा में स्कूल की ओर से प्रोत्साहन मिलने के बाद वहीं पर प्रशिक्षण आरम्भ किया। वह प्रतिदिन सुबह अपने घर पर भी अभ्यास करती हैं और राज्य स्तरीय खिलाड़ी रंजुमनी बरुआ की तरह महान धनुर्धर बना चाहती हैं। सातवीं कक्षा की ही एक अन्य विद्यार्थी, प्रियंका दत्ता को दूसरा स्थान मिला। इसी स्कूल की सातवीं कक्षा के एक

छात्र हिरणज्योति बरुआ को लड़कों के वर्ग में दूसरा स्थान मिला। उन्होंने कहा, "सर डेविड शारगियरी हमें प्रति शनिवार प्रशिक्षण देते और धनुर्विद्या से सम्बन्धित पाठ पढ़ाते हैं। मैं भी प्रतिदिन घर पर आधे घंटे का अभ्यास करता हूँ।" खेलों का पढ़ाई पर कोई बुरा असर नहीं होता, यह मानने वाला यह युवा खिलाड़ी दौड़ और फुटबॉल जैसे खेलों में भी रुचि रखता है। भोगेश्वर बरुआ की तरह अच्छा धावक बनने की इच्छा रखने वाले हिरण्य प्रतिदिन ३ से ४ घंटे दौड़ते हैं। इसी विद्यालय के सुनील रॉय (कक्षा सातवीं) और बिटुपन बरुआ (कक्षा छठी) को क्रमशः प्रथम और तृतीय स्थान मिले।

-उर्बशी घारफालिया, १३ वर्ष

१२-वर्षीय अनु को एक और साल बाद शिक्षा का अधिकार मिल जाएगा

बारह वर्षीय अनु नायक का परिवार डिब्रूगढ़ के मोहनबाड़ी चाय बागान की बीएफ़ लाइन में रहता है। वे अपने माता-पिता और सात भाई-बहनों के साथ रहती हैं। वे स्कूल नहीं जातीं। इसके बजाय, वह अपने घर पर छोटे भाइयों की देखभाल करती हैं। सात भाई-बहनों में तीसरे नंबर की अनु कहती हैं, "मैं संगयोगी शिक्षा केन्द्र में पहली कक्षा में पढ़ती थी। लेकिन एक साल पहले मुझे स्कूल छोड़ना पड़ा। अब मैं मेरे माता-पिता के काम पर जाने के बाद अपने भाई-बहनों की देखभाल करती हूँ। मैं पढ़ना चाहती हूँ, और मौका मिलने पर ज़रुर पढ़ूँगी।" हमने उनके पिता मदन नायक से इस बारे में पूछताछ की, और उन्होंने कहा, "हमें उनको स्कूल न भेज पाना बहुत अखरता है। लेकिन यदि वह स्कूल चली भी जाए, तो घर पर बड़ी समस्या हो जाती है। लेकिन फिर भी हम एक साल बाद उसे स्कूल भेजेंगे, जिससे उसका सबसे छोटा भाई थोड़ा बड़ा हो जाए।"

-मरजीना नाग, २१ वर्ष

Guwahati: Kasturba Gandhi National Memorial Trust, Assam Branch, Ulubari, Guwahati- 781007, ph- (o361) 2525534, Dibrugarh- Dikom Kasturba Labour Welfare Centre, Dikom, Dibrugarh, Assam. pin- 786101.
Published by Kasturba Gandhi National Memorial Trust, Gandhi Smriti and Darshan Samiti and UNICEF., email- muktaakash33@gmail.com

महान कौन?

कर्पूर देश पर राजा माणिक्यवर्मा का राज्य था। राजा स्वयं तो विद्वान थे ही, विद्वानों का आदर भी करते थे और कवि कलाकारों को राजाश्रय प्रदान करने के लिए उत्सुक रहते थे। उनके दरबार में गंगाधर मिश्र नाम का एक कवि था। वह राजा का बालमित्र था। उसने अनेक सुन्दर काव्यों की रचना करके साहित्यप्रेमी राजा का विशेष स्नेह प्राप्त किया था।

एक बार की बात है राजा माणिक्यवर्मा ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर अपने राज्य के सर्वश्रेष्ठ कवि का सम्मान करना चाहा। उन्होंने इस बात की घोषणा करायी कि सम्मानित व्यक्ति को भूदान और संपत्ति दान किया जायेगा तथा जन्मदिवस के एक सप्ताह पहले उसका नाम घोषित किया जायेगा।

इस घोषणा के कुछ दिनों बाद दरबारी कवि गंगाधर मिश्र ने अपने घर एक शाम कुछ कवि मित्रों की गोष्ठी बुलायी। जलपान के उपरान्त सब परस्पर वार्तालाप करने लगे, तभी पंडित सुधाकर दीक्षित ने कहा, ''मुझे मालूम हुआ है कि हमारे महाराज विरंचिनगर के स्वर्ण कुंतल नाम के कवि का सम्मान करने जा रहे हैं!''

निलकंठ कवि ने पं. सुधाकर दीक्षित की बात काटते हुए कहा, ''तुम्हारी बात विश्वास करने योग्य नहीं है। गंगाधर कवि महाराज के अत्यन्त घनिष्ठ मित्र हैं। जब उन्हें यह समाचार नहीं मालूम, तो तुम तक इसकी सूचना कैसे पहुँच सकती है?''

''महाराज ने विरंचिनगर में सुबंधु नाम के जिस संदेशवाहक को भेजा था, उसकी पत्नी सरला हमारे घर की सेविका सुभाषिणी की सखी है। उसी के द्वारा यह बात हमें मालूम हुई है।'' सुधाकर ने कहा।

कमला नागर

इन सब बातों को सुनकर गंगाधर मिश्र का मन मलिन हो गया। जब गोष्ठी समाप्त हो गयी तो वह रुष्ट होकर राजा के पास पहुँचा और खिन्नभाव से बोला, ''महाराज, राजधानी में यह चर्चा है कि जन्मदिवस के अवसर पर आप जिस कवि का सम्मान करने वाले हैं, उसका नाम आपने चुन लिया है। क्या मैं आपका निर्णय और उस सम्मानित कवि का नाम जान सकता हूँ?''

राजा माणिक्यवर्मा मंद-मंद मुस्कराते हुए बोले, ''गंगाधर, सुनो, मैं यह सम्मान विरंचि नगर के निवासी स्वर्ण कुंतल कवि को देना चाहता हूँ।''

गंगाधार बोला, ''महाराज, नगर के निवासियों का विश्वास था कि यह सत्कार और सम्मान मुझे प्राप्त होगा।''

गंगाधार की बात सुनकर राजा माणिक्यवर्मा जोर से हँस पड़े, बोले, ''गंगाधर, तुम मेरी दृष्टि में सदा के लिए महाकवि हो, मेरे इस निर्णय में कोई अन्तर नहीं आ सकता। पर इस बीच मैने स्वर्णकुंतल कवि के कुछ काव्यों को पढा। सचमुच ही वे श्रेष्ठ रचनाएँ हैं। स्वर्णकुंतल एक प्रतिभाशाली कवि है। उसने कभी राजाश्रय पाने की कामना नहीं की और विरंचिनगर के एक कोने में अज्ञात - सा रहकर अपने काव्य सृजन में लगा हुआ है। मुझे ऐसा लगा कि एक राजा होने के नाते उसका सम्मान करना मेरा कर्त्तव्य है!''

गंगाधार मिश्र कुछ कहने जा रहा था कि तभी मुख्य प्रहरी ने प्रवेश कर निवेदन किया, ''महाराज, विरंचिनगर से स्वर्ण कुंतल नाम के एक कवि आये हैं। वे आपके दर्शन की आज्ञा चाहते हैं।''

सुनकर गंगाधारमिश्र ने परिहास पूर्वक कहा, ''महाराज, देख रहे हैं न? ज़मीन जागीरदारी मिलने की सूचना प्राप्त होते ही कवि कैसे भागे-भागे राजधानी में आ पहुँचे हैं!''

राजा ने मुख्य प्रहरी को आदेश दिया कि कवि स्वर्णकुंतल को उनके सामने प्रस्तुत किया जाये। स्वर्णकुंतल के प्रवेश करते ही राजा ने पूछा, ''कविवर, आपने बड़ी जल्दी की कि सूचना मिलते ही आप इतनी लम्बी यात्रा करके राजधानी में आ पहुँचे। अभी तो हमने सम्मानित व यक्ति के नाम की नगर-घोषणा भी नहीं की। सम्मान

की अवधि अभी पन्द्रह दिन शेष है, यह समाचार हमारे दूत ने आपको दिया ही होगा।''

राजा माणिक्यवर्मा की बात सुनकर स्वर्णकुंतल चकित हो उठा। वह विनम्रभाव से बोला, ''महाराज, मेरे आगमन से संभवतः कुछ गलतफ़हमी हो गयी है। आप मुझे क्षमा करें! मैं तो केवल यह जानने के लिए आया था कि आप मेरा सम्मान किस लिए करना चाहते हैं?''

अब माणिक्यवर्मा के विस्मित होने की बारी थी। वे स्वर्णकुंतल का प्रश्‍न सुनकर बोले, ''कवि कुंतल, ऐसे लोग तो आसानी से मिल जाते हैं जो यह जानने की इच्छा रखते हैं कि उनका सम्मान क्यों किया जा रहा है? मेरी समझ में नहीं आ रहा कि ऐसे व्यक्ति के बारे में क्या सोचूँ ? आप अपना प्रश्‍न स्पष्ट करें।''

स्वर्णकुंतल ने नम्र शब्दों में कहा, ''महाराज, आप के दरबार में गंगाधरमिश्र जैसे सुप्रसिद्ध महाकवि उपस्थित हैं। मैं तो एक साधारण कवि हूँ और आपके लिए सर्वथा अपरिचित हूँ। आप उन्हें यह सम्मान न देकर मुझे सम्मानित करने जा रहे हैं। मैं इसका कारण जानना चाहता हूँ। अगर आप मेरा समाधान कर सके तो मैं आपका सम्मान स्वीकार करूँगा, अन्यथा नहीं।''

माणिक्यवर्मा सोचने लगे कि स्वर्णकुंतल कवि की बात का क्या उत्तर दें। तभी कवि गंगाधर मिश्र स्वर्ण कुंतल से बोला, ''कविवर, आप महाकवि के रूप में जिस गंगाधर मिश्र का उल्लेख कर रहे हैं, वह मैं ही हूँ। एक कवि के रूप में आपकी प्रतिभा से अभी मैं अपरिचित हूँ। पर आपने हमारे महाराज के सामने जो विचार व्यक्त किये, उनसे मैं यह समझ सका हूँ कि आप मुझसे कहीं अधिक महान व्यक्ति हैं। आप सचमुच ही सम्मान के योग्य हैं और इस विशेष सम्मान के अधिकारी हैं।''

राजा माणिक्यवर्मा अपने कवि मित्र गंगाधार मिश्र के विचार सुनकर परमानन्दित हुए।

जन्मदिवस आया। राजा ने समारोह में स्वर्णकुंतल के साथ गंगाधर मिश्र का भी भव्य सत्कार किया।

मान-मर्दन

वृन्दावन के लोग एक बार इन्द्र का यज्ञ करने की तैयारी करने लगे। यह देख कर कन्हैया ने नन्द से पूछा - 'पिताजी ! ये सब तैयारियाँ किसलिए ?' 'बेटा ! हम इन्द्र की पूजा करने जा रहे हैं। इन्द्र वर्षा के देवता हैं। उसी की कृपा से पानी बरसता है और हर तरह की फसलें होती हैं।' नन्द ने जवाब दिया। यह सुन कर कन्हैया ने कहा - 'पिताजी ! हमारे सच्चे देवी देवता तो ये गौएँ और यह गोवर्धन पहाड़ है। इसलिए हमें इनकी पूजा करनी चाहिए। हम इन्द्र की कृपा की भीख क्यों माँगने जाएँ ?' तब वृन्दावन के लोगों ने इन्द्र का यज्ञ बन्द कर दिया। यह देख कर इन्द्र को बहुत क्रोध आया। उसने ग्वालों से बदला लेने की ठानी। बस, उसकी आज्ञा से पल भर में आसमान बादलों से घिर गया। बिजली चमकने लगी। भयंङ्कर गड़गड़ाहट के साथ ओलों की बारिश शुरू हुई। तब कन्हैया ने उस विशाल गोवर्धन पहाड़ को अपनी कनीठी पर उठा लिया और एक छाते की तरह पकड़े रखा। ग्वाले सभी अपना गायों के साथ उसके नीचे आ गए । इन्द्र ने सात दिन तक यों पानी बरसाया । लेकिन वह वृन्दावन के लोगों का बाल भी बाँका न कर सका। तब उसने आकर कृष्ण के पैरों में पड़कर माफी माँग ली। इन्द्र का गर्व भङ्ग हो गया था।

चन्द्रभानु का गोदान

नरसिंहपुर गाँव में एक गृहस्थ रहता था, नाम था चन्द्रभानु । वह अव्वल दर्जे का कंजूस और संगदिल आदमी था। एक बार वह बीमार पड़ा। उसने अपनी बीमारी का इलाज कराया, पर कोई फ़ायदा न हुआ।

चन्द्रभानु की माँ शान्ता ने बेटे को समझाते हुए कहा - "बेटा, एक बार तुम्हारे पिता इसी प्रकार की बिमारी के शिकार हो गये थे। उन्होंने एक श्रेष्ठ ब्राह्मण को गोदान किया था। तुरन्त ही उनकी बिमारी अदृश्य हो गयी थी।"

"माँ, मेरी बिमारी का गोदान के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।" चन्द्रभानु ने अपनी माँ की बात काटते हुए कहा।

असली बात यह थी कि अपनी बिमारी के लिए चन्द्रभानु गोदान के खर्च में नहीं पड़ना चाहता था।

शान्ता ने फिर कहा - "बेटा, हम जो पाप करते हैं, वे ही हमें रोगों के रूप में सताते हैं। रोगों से हमें पुण्य करने की प्रेरणा और सीख लेनी चाहिए। यह एक चेतावनी है बेटा। तुम्हारा स्वभाव मुझसे छिपा नहीं है। तुम धन को केवल जोड़ना जानते हो, तुम्हें यह कंजूसी अपने स्वर्गवासी पिता से विरासत में मिली है।"

चन्द्रभानु के स्त्री-बच्चों ने भी गोदान करने के लिए उस पर जोर डाला।

विवश होकर चन्द्रभानु ने रामशर्मा नाम के एक ब्राह्मण को बुलवा भेजा और उसे एक गाभिन गाय दान देकर बोला - "शर्मा जी, जब गाय के बच्चा हो - बछड़ा या बछिया, तो आप उसे मुझे दे दीजियेगा। भला, आप उसका क्या करेंगे? वैसे भी मैं आप को केवल गाय दान में दे रहा हूँ।"

रामशर्मा ने कुछ विचलित होकर कहा- "साहू जी, माँ और बच्चे को अलग-अलग करना तो बड़ा पाप होगा।"

"देखिये, मनुष्य और पशु का न्याय अलग - अलग होता है। आप जिस न्याय या पाप की बात

२५ वर्ष पूर्व की कहानी

कर रहे हैं, वह मनुष्यों पर लागू होता है, पशुओं पर नहीं। फिर भी आप इतना कर सकते हैं कि गोवत्स जब दूध पीना बन्द कर दे, तभी आप उसे मुझे दें।'' चन्द्रभानु ने कहा।

रामशर्मा ने चन्द्रभानु की बात स्वीकार कर ली और गाय को अपने घर हाँक ले गया! दूसरे ही दिन चन्द्रभानु की बीमारी इस तरह गायब हो गयी, मानो जादू हो गया हो।

कुछ दिनों बाद गाय ने बछड़ा दिया। यह बात मालूम होने पर चन्द्रभानु उसे पाने के लिए बेचैन हो उठा। वह प्रतिदिन रामशर्मा के घर बछड़े को देखने के बहाने जाने लगा।

इसी तरह सप्ताह बीत गया। एक दिन चन्द्रभानु से रहा नहीं गया। उसने रामशर्मा से पूछा - ''शर्माजी, गाय अच्छी तरह दूध दे रही है न?''

''साहू जी, यह गाय तो देवता अंशवाली है। हर रोज कम से कम चार सेर दूध देती है।'' रामशर्मा ने कहा।

रामशर्मा स्वभाव से बड़ा संकोचशील ब्राह्मण था। उसने चन्द्रभानु को खुश करने के ख्याल से दो सेर दूध का बढाकर चार सेर कर दिया था।

रामशर्मा के मुँह से चार सेर का नाम सुनकर चन्द्रभानु का दिल धड़क उठा। उसके पास अपनी कई गायें थी, पर कोई भी गाय इतना दूध नहीं देती थी।

''शर्माजी, अगर यह गाय इतना अधिक दूध देती है तो मेरे विचार से उसके दूध में वह गुण, वह स्वाद तो नहीं होगा! चन्द्रभानु ने पूछा।

अगर रामशर्मा यह उत्तर दे देता कि दूध गुण और स्वाद में हल्का है तो शायद चन्द्रभानु कुछ हद

तक सन्तुष्ट अवश्य हो गया होता। कम से कम उसे एक उत्तम गाय से वंचित होने का दुख तो न होता।

पर रामशर्मा में चन्द्रभानु जैसी चालाकी नहीं थी। उसने अपने यजमान को प्रसन्न करने के विचार से कहा - ''साहू जी, आप ने जिस धार्मिक भावना से यह गाय मुझे दान दी है, उसके कारण इस गाय के दूध का स्वाद वर्णनातीत है। शायद अमृत इसी प्रकार का होता होगा।''

''अच्छा! तब तो इस दूध का स्वाद मुझे भी चखना चाहिए।'' चन्द्रभानु ने बड़ी तत्परता से कहा। रामशर्मा ने तत्काल लोटा भर दूध मंगवाया और चन्द्रभानु को दिया। दुध सुस्वादु था।

दूध पीकर चन्द्रभानु की चिन्ता और बढ गयी। वह घर लौट आया। उस पूरी रात उसे नींद नहीं आयी।

दूसरे दिन सुबह ही सुबह चन्द्रभानु ने रामशर्मा को बुलाकर कहा - ''शर्माजी, मैं अजीब किस्म की बीमारी से पीड़ित हूँ। आप के यहाँ का दूध

पिया तो बड़ा आराम मिला। मुझे अब तो पूरा विश्वास हो गया कि सचमुच ही इस गाय के अन्दर देवता का अंश है। उसके दूध में निश्चय ही अमृत का प्रभाव है। आप ने कहा था कि गाय प्रतिदिन चार सेर दूध देती है, इसलिए मेरी विनती है कि आप हर रोज मेरे घर दो सेर दूध भेज दिया कीजिये। बस, जब मैं स्वस्थ हो जाऊँ, तब आप दूध बन्द कर दीजियेगा।''

चन्द्रभानु की बात सुनकर रामशर्मा हक्का-बक्का खड़ा रह गया। फिर भी वह कुछ प्रतिवाद नहीं कर पाया और 'अच्छा!' कहकर अपने घर चला गया।

शान्ता ने जब अपने बेटे की करतूत सुनी तो उसे डाँट कर कहा - ''बेटा! यह अधम काम है। अगर तुम गाय को दान करके उसका दूध लोगे तो तुम्हारा पुण्य तो नष्ट हो ही जायेगा और उलटे तुम पाप के भागी बनोगे। ऐसा काम मत करो!''

''अगर पुण्य नष्ट हो गया होता, तो मैं फिर से बिमारी का शिकार हो जाता। तुम चिन्ता मत करो!'' चन्द्रभानु ने तर्क दिया।

उस दिन से रामशर्मा गाय का पालक मात्र रह गया। सारा दूध तो चन्द्रभानु के घर जाने लगा।

कुछ दिन बीत गये। चन्द्रभानु पुनः बीमार पड़ा। उसने डर कर रामशर्मा से दूध लेना बन्द कर दिया। पर चन्द्रभानु की बीमारी घटी नहीं। वैद्य बराबर उसे दवाइयाँ देता, पर बीमारी ऐसी थी कि टलने का नाम नहीं ले रही थी।

चन्द्रभानु अपनी कृपण बुद्धि से यही सोचता रहता कि जब मैंने रामशर्मा से दूध लेना बन्द कर दिया है तो मुझे क्यों नहीं ठीक होना चाहिए। वह अब भी अपने को गोदान के पुण्य का अधिकारी मानता था। एक दिन अचानक एक साधु आकर चन्द्रभानु के मकान के सामने खड़ा हो गया और बोला - ''इस घर में पाप का निवास है। इस पाप से मुक्ति होनी चाहिए !''

साधु के शब्द सुनकर शान्ता ने उसे अन्दर बुलवाया और अपने पुत्र की बीमारी की जाँच करने का आग्रह किया। साधु ने चन्द्रभानु की जाँच करके और उसकी माँ शान्ता से सारा किस्सा सुनकर कहा - ''तुम्हें गोदान का पुण्य प्राप्त नहीं हुआ है, बल्कि दूध की चोरी का पाप लग गया है।''

चन्द्रभानु ने दीनता भरे स्वर में पूछा - ''स्वामी जी, ऐसा क्यों हुआ? मैंने तो गाय को दान ही कर दिया था। उसका दूध भी कुछ दिन तक तो पंडित रामशर्मा के परिवार ने पिया था?''

''तुम जैसे कंजूस लोगों के पापों के लिए भगवान ही प्रत्यक्ष रुप से प्रमाण दे सकते हैं। गोदान के

पुण्य ने तत्काल संजीवनी जैसा काम किया और तुम बीमारी से मुक्त हो गये। अगर तुम्हारे अन्दर सद्बुद्धि होती तो तुम इस प्रत्यक्ष प्रमाण के आधार से पुण्यात्मा बन गये होते और दान की महिमा को समझते। पर तुमने स्वस्थ होते ही प्रवंचना करके रामशर्मा से दूध हरण करना आरंभ कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि तुम फिर से बीमार हो गये। अब रामशर्मा के मन में यह भीति है कि स्वस्थ हो जाने पर तुम फिर से उससे दूध मांगोगे । उसके मन का भय ही तुम्हारे नीरोग होने में बाधा बना है।''

''स्वामी जी आप बताइये, मुझे क्या करना चाहिए?'' चन्द्रभानु ने पुछा।

''दूध का यह हरण पाप का कारण बन गया है। इस पाप से मुक्त होने के लिए तुम्हें एक और गाय किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को दान करनी होगी।'' साधु ने कहा।

''अच्छी बात है। वह गोदान मैं आप को ही कर देता हूँ।'' चन्द्रभानु ने कहा।

''मैने आज तक किसी को दान नहीं किया है, इसलिए दान देने का पुण्य मुझे प्राप्त नहीं ।'' साधु ने कहा।

''तब तो आप ही बतायें, किस पुण्यात्मा को यह दान देना ठीक होगा?'' चन्द्रभानु ने पुछा।

''इस गाँव में तो सब से बड़ा पुण्यात्मा रामशर्मा ही है। उसे दूध दान देने का पुण्य प्राप्त हो गया है।'' साधु ने कहा।

यह बात सुनकर चन्द्रभान अवाक् रह गया। साधु मुस्करा कर बोला - ''तुमने जब गोदान किया, तब उस दान को लेनेवाला व्यक्ति अगर किसी को दूध का दान देता तो तुम्हे उसका पुण्य प्राप्त होता। पर रामशर्मा ने दूध तुम्हें दिया, इसलिए तुम्हें उस दूध को चुराने का पाप लगा है और उस ब्राह्मण को दूध दान करने का पुण्य प्राप्त हुआ है। अब तुम्हें यह कडुवा अनुभव प्राप्त हो चुका है। तुम आज से अपनी कंजूसी छोड़ दो।'' साधु ने सलाह दी।

इसके बाद चन्द्रभानु ने बछड़ों सहित दो उत्तम गायें रामशर्मा को दान दीं और अपने अपराध के लिए क्षमा मांगी।

चन्द्रभानु शीघ्र ही स्वस्थ हो गया। उस दिन से वह यथोचित दान-पुण्य करते हुए सुखी स्वस्थ जीवन बिताने लगा।

मैं क्या बन सकता हूँ?

आपने कितनी बार ये सवाल सुना है? कम-से-कम मुझे तो यह नहीं पता कि इसका जवाब कैसे दिया जाना चाहिये! चुनने के लिए कितनी राहें हैं: कानून, निर्माण और सुधार, संगीत और कलाएँ, चिकित्सा, धन का प्रबन्धन...इसकी सूची तो अन्तहीन है!

मेरा नाम साई है और मैं पन्द्रह वर्ष का हूँ। इस माह से, मैं आपको उपलब्ध करियर विकल्पों और हमें अपनी पसन्द के काम में श्रेष्ठता हासिल करने के लिए जो निपुणता चाहिये उसके बारे में बहुत सी बातें बताऊँगा।

शुरु करने से पहले, आइये मैं आपको वर्क, जॉब और करियर के बारे में बता दूँ।

वर्क या काम: कोई भी कार्य जो ध्यान लगा कर किया जाए - चाहे वह शेल्फ़ रंगना ही हो, काम है।

जॉब या नौकरी: उन विबिन्न कार्यों से सम्बद्ध होती है जो किसी को भी अपने ऑफ़िस में करने होते हैं।

करियर या पेशा: वह होता है जो मेरा परिचय देता है। करियर केवल वहआजीविका ही नहीं है जो हमें पैसा देती है, बल्कि इससे हमें एक पहचान, प्रसिद्धि और सम्मान मिलता है।

गतिविधि

ये लोग कौन हैं?

१ तेंडुलकर: अ क्रिकेटर ब राजनेता स गायक

२ ए आर रहमान: अ अभिनेता ब वकील स संगीतकार

३ मनमोहन सिंह: अ नर्तक ब राजनेता स डॉक्टर

मुझे यकीन है आपको सही विकल्प चुनने में कोई कठिनाई नहीं हुई होगी! अब अपने आपसे पूछिये - आप इन लोगों को कैसे जानते हैं? निश्चित ही वे क्या करते हैं इस कारण! करियर हमें यह देता है - हमारी पहचान। हमारा करियर हमें और भी कई चीज़े देता है:

- पैसा
- सामाजिक स्तर
- मित्र वर्ग
- यह हमारे जीवन को परिभाषित करता है

तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि लोग हमसे हमारे करियर के चयन के बारे में प्रश्न करते रहते हैं। अगली बार, हम उपलब्ध करियर विकल्पों और आवश्यक निपुणताओं के बारे में बात करेंगे।

तब तक, परेशानियों से बचे रहो!

साई

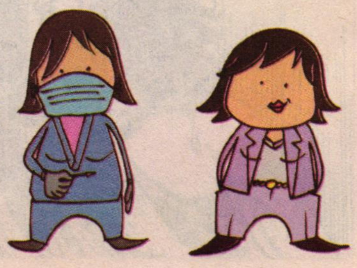

जिम्मेदार नागरिक, जो हमेशा वोट देता है

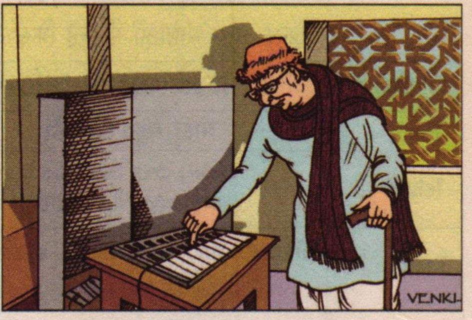

शिमला के पास जग्गर के रहने वाले भदरु, १२७ वर्ष के हैं। उन्होंने अंग्रेज़ों का ज़माना और उनका राज खत्म होते देखा है, भारतीय लोकतंत्र को फलते-फूलते देखा है, ग्लोबलाइज़ेशन देखा है। आपके दिमाग में आने वाली अधिकतर बातों के वे साक्षी रहे हैं! और सबसे अच्छी बात ये है कि भदरु अब भी हमारे लोकतंत्र के प्रति उतने ही समर्पित हैं और उन्होंने आज तक कोई चुनाव बिना मतदान नहीं छोड़ा! वे सन् १९५२ से लगातार वोट दे रहे हैं।

चुनाव आयोग की सूचियाँ उन्हें न केवल हिमाचल प्रदेश बल्कि देश का सबसे अधिक उम्र का मतदाता मानती हैं। हिमाचल प्रदेश के मुख्य चुनाव अधिकारी अनिल खीची के अनुसार, शिमला संसदीय क्षेत्र में भदरु, पिता करमू, उम्र १२७, मतदाता क्रमांक २२६, कसुम्पति विधानसभा क्षेत्र के मतदान केन्द्र क्रमांक ३५ पर अपने मताधिकार के प्रयोग के लिए दर्ज है।

वैसे भदरु के अनुसार उनकी उम्र १५० वर्ष है।

नदी पार करना

यदि आप ख़तरों से भरपूर खेलों में रुचि रखते हैं, तो हो सकता है आपने नदी पार करने के खेल के बारे में सुना हो। लेकिन कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जिनके लिए नदी पार करना कोई खेल नहीं बल्कि यह उनके स्कूल का रोज़मर्रा का रास्ता है! जी हाँ, ये बच्चे हैं भोपाल के नरेला हनुमन्त गाँव के।

इस गाँव के स्कूल को गाँव से अलग करने वाली नदी को पार करने के लिए ना तो कोई पुल है, न ही कोई नाव। समस्या से निपटने के लिए, गाँव वालों ने नदी के आर-पार कुछ तार और रस्सियाँ बाँध दिए हैं। बच्चे एक रस्सी पर चलते हैं और दूसरी का सहारा लेते हैं, जो इस रस्सी से लगभग एक मीटर ऊपर बँधी है। स्कूल जाने के लिए बच्चों को रोज़ यह करना ज़रुरी है!

वैसे तो यह बहुत ख़तरनाक तरीका है, लेकिन स्थानीय प्रशासन के उन्हें कोई सुरक्षित तरीका प्रदान न कर पाने के कारण बच्चों के पास कोई और चारा नहीं है। तो अगली बार अपनी ठसाठस भरी स्कूल बस के बारे में शिकायत करने से पहले तुम एक बार इन बच्चों पर मँडराते ख़तरे के बारे में भी सोचना!

चूँ-चूँ का डिब्बा

आप कितनी भाषाएँ जानते हैं? अब चन्दामामा के माध्यम से बहुत सी भाषाएँ जानें एवं आत्मविश्वास के साथ भारत भ्रमण करें! नीचे की तालिका में दिए गये भाषा के शब्द पढें। उसके बाद तालिका में और नीचे देखकर अन्य भाषाओं में इन्हें किस तरह बोला एवं लिखा जाता हैं वह जानें।

English	It is hot outside	Let's play
Hindi	बाहर बहुत गर्क्की है।	आओ खेलें।
Telugu	బయట చాలా వేడిగా ఉంది. बायता चाल वीडिगा वुन्दी.	ఆటాడుదాం రండి आतादुदाम रान्दी.
Tamil	வெளியில் அனலாக உள்ளது. वेलियिल अनलाग उल्लथु.	நாம் விளையாடலாம். नाम विलैयादलम.
Bengali	বাইরে গরম। बाइरे गरोम.	চলো খেলি। चालो खेली.
Marathi	बाहेत गर्मी आहे. बाहेर गरक्की आहे.	चला खेळूया. चला, खेळु ह्वा.
Kannada	ಹೊರಗೆ ತುಂಬಾ ಬಿಸಿಯಾಗಿದೆ होरागे तोम्बा बिसियागिदे.	ಬನ್ನಿ ಆಡೋಣ बन्नी आडोणा.
Oriya	ବାହାରେ ଭାରି ଗରମ ହେଉଛି। बाहारे भारी गरम हेउचि.	ଚାଲ, ଖେଳିବା। चला, खेलिबा.
Gujarati	બહાર ગરમી છે. बहार गरक्की छे.	ચાલો રમીએ. चालो रक्कीए.
Assamese	বাহিৰত বৰ গৰম। बाहिरोत बोर गोरोङ्क.	আমি খেলোগৈ ব'লা। आक्की खेलुगोई बोला.
Malayalam	പുറത്ത് നല്ല ചൂടാണ്. पुराथु नल्ला छोडानु.	നമുക്ക് കളിക്കാം. नाङ्कुक्कु कलिक्काङ्क.
Santali	ᱵᱷᱟᱦᱨᱮ ᱟᱫᱤ ᱥᱤᱛᱩᱝ ᱠᱟᱱᱟ। भाहरे आदि सितुन्ग काना.	ᱫᱮᱞᱟ ᱵᱳ ᱮᱱᱮᱡ-ᱟ। देला बो एनेज-आ.
Sanskrit	बहिरह तीव्र तापः अस्ति. बहिरह तीव्र तापः अस्ति.	खेलनाय आगम. खेलनाङ्ग आगङ्क.
French	Il fait chaud dehors ल्ल ह्वे शो डी आर	Allons jouer अल्लोन जू-ई
German	Es ist heiß draußen. ऐस इस्ट हीस ड्रॉज़न	wir wollen spielen. वियर वूलन ह्वशीलन
Spanish	Hace calor fuera. आश कैलर ह्वूर	Jugamos. खुगाङ्कोस

English	Look at that flower	The river bends here
Hindi	उस ड्ढूल को देखो।	नदी यहाँ से ड्ढुड़ती है।
Telugu	ఆ పువ్వు కేసి చూడండి. आ पुवु कीसि चूदान्दी.	నది ఇక్కడ మలుపు తిరుగుతోంది. नादी इक्कदा मालुपु तिरुगुतोन्डी.
Tamil	அந்த மலரைப் பாருங்கள். अन्धा ड्ढलरै पारुन्गल.	நதி இங்கு வளைகிறது. नाधि इन्गु वलैगिराथु.
Bengali	ঐ ফুলটা দ্যাখো। ओई ड्ढूल ता द्याखो.	নদীটা এইখানে বেঁকে গেছে। नधिता एइखाने बेणके गेच्छे.
Marathi	ते फूल बघ. ते ड्ढूल बघा.	नदी इथून वळते. नदी इथून वळते.
Kannada	ಹೂವಿನತ್ತ ನೋಡಿ हूविनत्ता नॉडी.	ನದಿಯು ಇಲ್ಲಿ ತಿರುಗುತ್ತದೆ नादिड्ढु इल्लि तिरुगुत्तदे.
Oriya	ସେହି ଫୁଲଟିକୁ ଦେଖନ୍ତୁ। सेहि ड्ढु लातिकु देखान्तु.	ଡ୍ଢ ଦୀଟି ଏହିଠାରେ ବାଙ୍କି ଯାଇଛି। नदिति एहिन्थारे बान्की जाईचि.
Gujarati	તે ફૂલ જુઓ. ते ड्ढूल जुओ.	નદી આ બાજુ વળે છે. नदी आ बाजु वळे छे.
Assamese	সেই ফুলটো চোৱাচোন। क्षेई ड्ढु लतु सुवासुन.	এইখিনি ঠাইত নদীখনে ভাঁজ লৈছে। एखिन थैत नोदिखेने भाज लोईसे.
Malayalam	ആ പൂവ് നോക്കൂ. आ पूवु नोक्कू.	പുഴയ്ക്ക് ഇവിടെ വളവുണ്ട്. पुझाक्कु इविदे वालावुन्दु.
Santali	ᱳᱱᱦᱟ ᱵᱟᱦᱟ ᱠᱟᱭᱟᱜ ᱢᱮᱭ᱾ ओन्हा बाहा कायाग मेय.	ᱱᱳᱱᱫᱮ ᱱᱚᱭᱤ ᱠᱟᱫᱵᱩᱝ ᱟᱠᱟᱱᱟ᱾ नोन्दे नयि कादबुन्ग आकाना.
Sanskrit	तत पुश्पम पश्य. तत पुश्पड्ड पश्ड्ड.	अत्रत नदी परावर्तति अत्रत नदी परावर्तते
French	Regardes cette fleur रिगार्ड सेट फ़्लेर	La rivière est déviée ici ला रिविड्डेर अ देविड्डा ईश
German	Schauen Sie auf diese Blume शौं ज़ीह ऑ दीहज़ ब्लूड्ड	Der Fluss biegt sich hier दर फ़्लू बीट सिश हीअर
Spanish	Mira a la flor. ड्ढिरा अ ला फ़्लर	El río se dobla aquí. एल रिड्डो से डॉब्ला अकी

एक चम्मच शकर

४१३ ईपू, २३वाँ दिन, अश्विन मास, महिलारोप्य का राजमहल

वे सभी एक छज्जे पर एक साथ खड़े थे, जो पक्षियों और पशुओं की आकृतियों से शानदार ढंग से सजा था। ''देखा आपने! आपने देखा ना वे कैसा व्यवहार करते हैं?''

इस विशाल महल के आस-पास उसके मैदान थे, पेड़ों, फूलों की झाड़ियों और लम्बे-चौड़े घास के मैदानों से साथ। इस समय इसका अधिकांश भाग तो शान्त था, बस छज्जे के ठीक नीचे कोई विवाद चल रहा था।

तीन लड़के, जो सभी बारह से पंद्रह की उम्र के

थे, कीचड़ और घास में लोट रहे थे। उनकी हाथापाई पहले तो दोस्ताना लहजे की थी, फिर धीरे-धीरे उनके स्वर गुस्से में चिल्लाने, खीजकर बोलने और एक-दूसरे से चुभने वाली बातें कहने वाले हो गए। महल के चार संतरी वहाँ खड़े-खड़े उन्हें अलग करने की असफल कोशिशें कर रहे थे।

''ये पूरे समय ऐसा करते हैं,'' ऊँचा-पूरा राजसी वेशभूषा वाला व्यक्ति बोला। ''मैं इनके लिए अध्यापक ढूँढते-ढूँढते परेशान हो गया हूँ। कोई भी इन्हें अनुशासित नहीं कर सका। कुछ ही पल, और ये फिर वैसे ही बिगड़ैल हो जाते हैं।''

भगवा वस्त्र पहने हुए उम्र में अधिक बूढ़ा व्यक्ति, जिसका ललाट चौड़ा और आँखें तीक्ष्ण थीं, बोला, ''राजकुमारों को मूलभूत शिक्षा मिली है, महाराज?''

राजा अमरशक्ति ने सिर हिलाया, ''राजा के रुप में यह न्यूनतम था जो मैं उन्हें दे सकता था। किन्तु आचार्य एक दिन मेरे बड़े पुत्र को इस देश का राजकाज संभालना है - और बाकी दो को उसकी मदद करनी है। और आप इन्हें देखिये। क्या ये किसी भी तरह राजकुमार लगते हैं?''

नीचे का झगड़ा चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था, और अब तीनों लड़के एक-दूसरे पर कीचड़ फेंक रहे थे। अचानक दूर से किसी ने उन्हें डाँटा और साफ़ा बाँधे एक मध्य वय का आदमी तेज़ी और दृढ़ कदमों से चलता उनके पास आया। थोड़ी सी फटकार के बाद राजकुमार चुपचाप एक-दूसरे को छोड़ अलग हट गए।

''मेरे मन्त्री, सुमति,'' राजा ने कहा। ''जैसा कि आप

देख सकते हैं, केवल वे ही इन्हें सम्भाल सकते हैं।"

अचानक राजा ने विष्णु शर्मा की ओर मुड़ कर उनके हाथ पकड़ लिए। "आचार्य, मैं अपने बच्चों को सही राह पर लाने के लिए कुछ भी कर सकता हूँ। आप अपना पारिश्रमिक बताएँ - आपके नाम पर सौ गाँव? या जितने सोने के सिक्के मैं खुद भी अपने पूरे जीवनकाल में भी नहीं देखूँगा, उतने आपको अर्पण कर दूँ?"

विष्णु शर्मा हँस पड़े। "मैं आपकी भावना और व्यग्रता को समझता हूँ महाराज - लेकिन धन मुझे ललचाता नहीं है। यदि मैं आपके पुत्रों को शिक्षा देना स्वीकार करता हूँ, तो उसका लक्ष्य केवल उन्हें दुनियादारी से अवगत कराना ही होगा। और यदि मैं छः महीने में यह नहीं कर पाया, तो अपना नाम बदल दूँगा!"

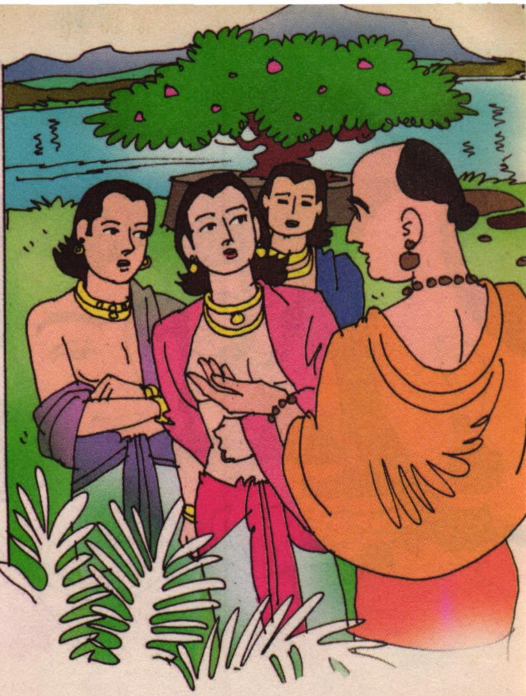

* * *

४१३ ईपू, २५वाँ दिन, पौष मास, वाराणसी

विष्णु शर्मा ने अपने तीनों शिष्यों की ओर देखा। लगता था कि राजा अमरशक्ति का अपने पुत्रों के बारे में अन्दाज़ ग़लत था - वे तो उससे भी गए बीते थे।

विक्रम, पुरु और मनु ने अपने को बनारस भेजे जाने की योजना आरम्भ से ही विरोध किया था और प्रत्येक चरण पर उसमे व्यवधान डालने का प्रयास किया। विष्णु शर्मा के कठोर नियमों वाले आश्रम में आने के बाद से, सुख-सुविधा न मिलने के कारण उन्होंने काफ़ी परेशानियाँ पैदा कीं और किसी पाठ पर ध्यान नहीं दिया।

विष्णु शर्मा को लगा कि ये राजकुमार उन्हें, भारतवर्ष के सबसे महान शिक्षकों में से एक को बराबरी की टक्कर देने लायक थे। इस शर्मिन्दगी को तो झेलना ही है, पर राजा का सामना कौन करेगा?

यह सुबह भी पिछले तीन माह से कुछ अलग नहीं थी लेकिन वे फिर भी अपने कर्तव्य का पालन पूरी निष्ठा से करने का प्रयास कर रहे थे। "...और इस कारण, एक अच्छा राजा हमेशा उनकी बात पर ध्यान देता है जिन्हें देश के नियमों और सरकार और वैधानिक प्रक्रिया की अच्छी जानकारी हो।"

पुरु ने जँभाई ली, मनु ने अपना कान खुजाया, और विक्रम ने बोरियत का प्रदर्शन करते हुए कन्धे उचकाए। "राजा के रुप में, मुझे अपना राज्य चलाने के लिए किसी की सलाह की आवश्यकता नहीं है," उसने कहा।

"तब तो महिलारोप्य की स्थिति दयनीय हो जाएगी क्योंकि तुम्हें कुछ आता-जाता नहीं है!" मनु के कटाक्ष किया।

"मेरे पास अमर गुप्ता है," विक्रम ने दाँत दिखाए। "उसके पिता बहुत धनवान व्यापारी हैं। उसे अपना प्रमुख मन्त्री बनाने पर उसने मुझे अरबी घोड़ों का पूरा रिसाला लाकर देने का वादा किया है।"

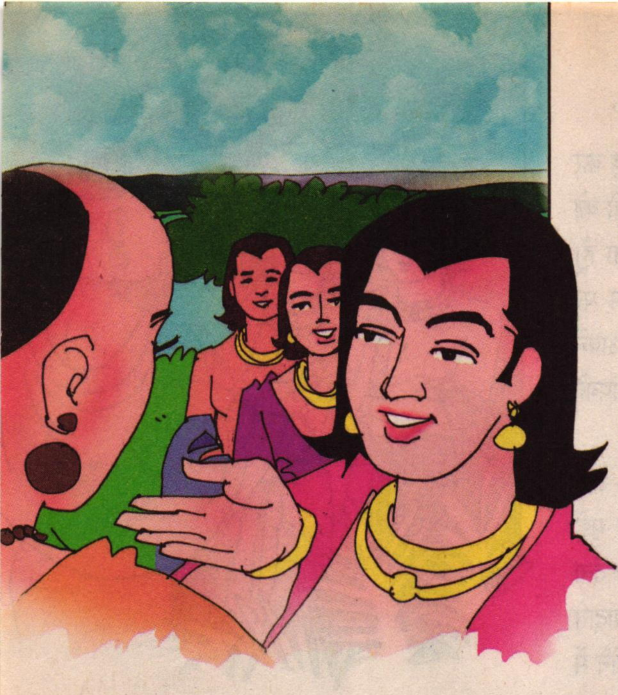

संसार से रह दूर और मस्त
वह जो छोड़ता धर्म का रस्ता
जीवित दिखे तो भी होता मुर्दा।''

''बात सही है,'' विक्रम बड़बड़ाया।

''तुम्हें क्या पता? तुम तो निपट अज्ञानी हो,'' पुरु के उलाहना दिया।

''बिल्कुल सही,'' विष्णु शर्मा ने बात काटी, ''और कपिंजल और सिग्रह भी ऐसे ही थे।''

''फिर क्या हुआ?'' मनु ने उत्सुकता दिखाई।

''होना क्या था? बिल्ली उन दोनों को खा गई,'' विष्णु शर्मा बोले, ''क्या तुम्हारा जानी दुश्मन तुम्हें पकड़ने के बाद छोड़ देगा?''

''ओह!'' राजकुमार इस कठोर सत्य को हजम करते चुपचाप बैठे रहे।

विष्णु शर्मा धीरे से हँसे, ''यही वह जगह है राजकुमार, जहाँ तुम्हें अपने मस्तिष्क का उपयोग करना है। स्थिराजीवी नामक अति बुद्धिमान कौवे का ही उदाहरण लो-''

''तब तो तुम वही ग़लती दोहराओगे जो कपिंजल और सिग्रह ने की थी।'' विष्णु शर्मा ने रोका।

''ये कौन हैं?'' पुरु और मनु ने पूछा

विष्णु शर्मा काफ़ी देर तक उन्हें एक टक देखते रहे। उनका मस्तिष्क बहुत तेज़ी से सोच रहा था। ''हमारी गौरैया और खरगोश में उनके रहने के स्थान के बारे में विवाद था और उन्होंने एक विद्वान बिल्ली से विवाद हल करवाया।''

''गौरैया? खरगोश? बिल्ली?''

''जानवरों में बहुत बुद्धिमत्ता होती है - यदि हमारे पास उसे समझने की बुद्धि हो।'' विष्णु शर्मा ने समझाया।

''इस बिल्ली में विद्वानों के सभी लक्षण थे। वह इस प्रकार की कविताएँ भी बनाती थी:

''यह अधम शरीर है पल का साथी
संसार का धन ना हमेशा का साथी
मृत्यु है वास्तविक सत्य

* * *

४१२ ई़पू. २०वाँ दिन, चैत्र माह, महिलारोप्य का राजमहल

''...और हम अपने सीमांत गाँवों पर सीधे आक्रमण को सहन नहीं कर सकते। फिर भी, क्योंकि हमारे पड़ौसी राजा शक्तिशाली हैं, अतः हमें उनकी मित्रता भी चाहिए।'' राजा अमरशक्ति अपने दरबार में सिंहासन पर बैठे थे। उनके ललाट पर चिन्ता की लकीरें थीं। उनके आसपास सुमति की अगुआई में उनके मन्त्री बैठे थे, जो सभी शत्रु से निपटने के तरीके सुझा रहे थे।

विष्णु शर्मा मूकदर्शक बने बैठे थे, और उनके साथ तीनों राजकुमार भी थे।

अचानक, राजा अपने पुत्रों की ओर मुड़े। ''विक्रम,

पुरु, मनु - तुमने शास्त्रों और कानून में अपनी शिक्षा पूरी कर ली है," पैनी निगाहों से पुत्रों की ओर देखते हुए वे बोले। "एक दिन तुम्हें इस देश पर शासन करना है। तुम्हारे क्या विचार हैं?" तीनों राजकुमारों ने एक दूसरे की ओर, और फिर अपने गुरु की ओर देखा, और गुरु ने उन्हें सिर हिलाकर आज्ञा दी।

विक्रम खड़ा हुआ। "ससम्मान, महाराज, क्योंकि राजा का धर्म शान्ति बनाए रखना भी होता है, अतः हम अन्य विकल्पों के लिए प्रयास किए बिना सीधे युद्ध का विकल्प नहीं अपना सकते। सबसे पहले हमें विनम्रता दिखानी चाहिये - युद्ध हमारे अहम् की तुष्टि कर सकता है लेकिन इससे प्रजा को बहुत तकलीफें होंगी। हम नम्रता से अपने पड़ोसी को जाने के लिए कह सकते हैं।"

"यदि इससे सफलता नहीं मिलती, तो हमें उनके साथ थोड़ी चतुराई दिखानी चाहिये," पुरु ने कहा।

"इससे भी बात न बनने पर हम अपनी युद्ध क्षमता का परिचय देना चाहिये जिससे अमारे पड़ौसी अपना रवैया बदल सकें।" मनु के कहा।

काफी समय तक खामोशी रही। फिर राजा धीरे से उठे, अपने पुत्रों की ओर बढ़े और उन्हें गले से लगा लिया। फिर वे विष्णु शर्मा के चरणों में गिर पड़े। "आचार्य, आपने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दी है।"

"जहाँ तक सीमा पर आक्रमण का सवाल है, महाराज -" विष्णु शर्मा ने कुछ कहना चाहा।

"कोई आक्रमण नहीं हुआ। यह तो केवल मेरे पुत्रों की शिक्षा की परीक्षा का तरीका था।"

राजा मुस्कुराए। "आप कुछ भी माँग लें और वह आपका हो जाएगा।"

विष्णु शर्मा ने मुश्किल से राजा को समझाया कि उन्हें कुछ नहीं चाहिये। फिर राजा ने पूछा, "आपने वह काम कैसे कर डाला जो और कोई इतने वर्षों में नहीं कर पाया था?"

गुरु मुस्कुराए। "लम्बे और उबाऊ भाषण सुनना कोई भी पसन्द नहीं करता महाराज! लेकिन आप अपनी सीखों को कहानियों में पिरो दें और तब कोई रुचि न लेने वाला बच्चा भी उसे ग्रहण कर लेगा। मुझे भी रणनीति बनानी आती है।"

राजा अमरशक्ति हँस पड़े। "ईश्वर करे आपकी कहानियाँ और बेहतर होती जाएँ - और समूचे विश्व को पढ़ा सकें।"

-पवित्रा श्रीनिवासन

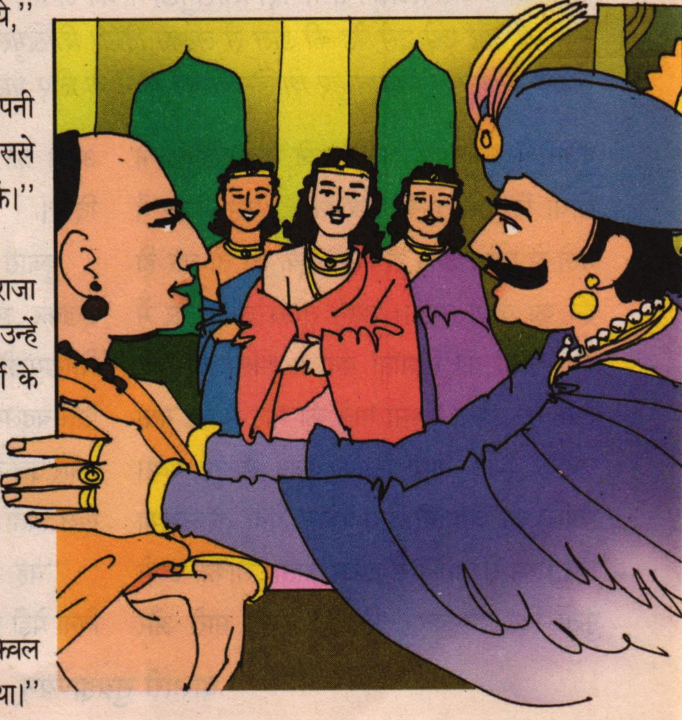

शिथिलालय - ४

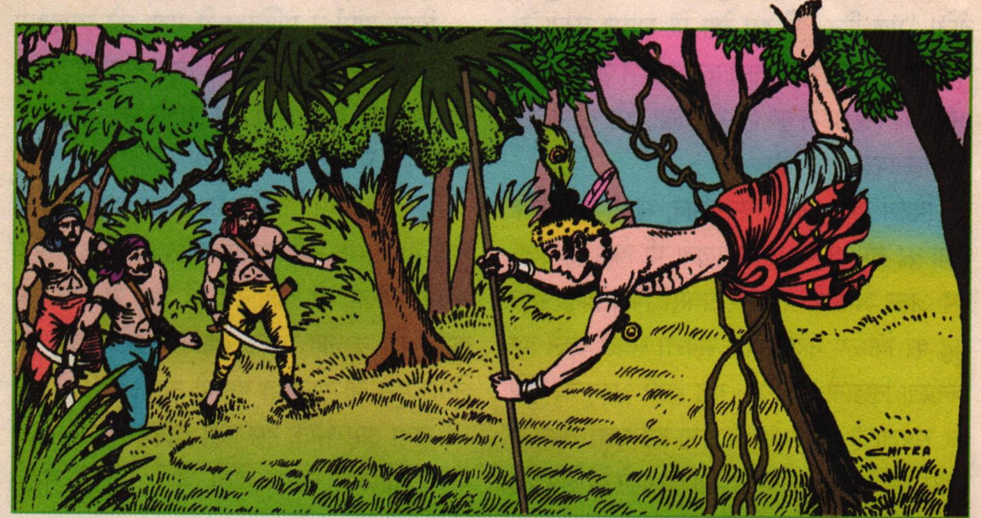

(अपने को शिथिलालय का पुजारी कहने वाले विकृत आकार वाले व्यक्ति की खोज में शिखिमुखी और विक्रमकेसरी अलग:अलग रास्ते गए। शिखिमुखी ने जब अमराई में कदम रखा तब उसके एक पैर में रस्सी कस गई और उसे उसे पेड़ की डाल से लटका दिया। शिखिमुखी ने पुजारी को भाले से भोंकना चाहा। पुजारी के अनुचर चिल्लाते हुए शिखिमुखी को मारने के लिए भाले लेकर टूट पड़े। इसके बाद -)

पुजारी के अनुचरों के भाले उठाने पर शिखिमुखी ने सोचा कि अब मृत्यु निश्चित है। उसके मन में मरने से पहले उनमें से किसी एक को तो मार ही देने का जोश उमड़ा। उसने तुरन्त उसके पैर में बँधी रस्सी को निशाना बनाकर भाला चलाया। रस्सी का आधा हिस्सा भाले की चोट से फट गया जबकि बाकी आधा उसके वज़न से टूट गया। शिखिमुखी ज़रा भी असावधान होता तो उसका सिर धम्म से ज़मीन से टकरा जाता। लेकिन उसने फुर्ती दिखाकर बन्दर की तरह पल्टी मारी और अपने को रोकने के लिए भाला ज़मीन में घुसा दिया।

पुजारी के अनुचर उसकी इस होशियारी को देखकर अचरज में आ गए। उनमें से एक ने शिखिमुखी की तारीफ करते हुए कहा, ''यह जंगली पैंतरे बदलना बहुत अच्छा जानता है। ऐसा आदमी हमारे दल में होता तो हमारे लिए सब बाएँ हाथ का खेल होता।''

''यह आदमी नहीं बन्दर है। जमीन को छुए बिना पेड़ों की डालों पर उछलता रेंगता विंध्याचल

दासारी सुब्रह्मण्यम्

तक पहुँच जाएगा। देखते क्या हो? भाले चलाओ।'' एक दूसरा अनुचर बोला।

इस तरह पुजारी के अनुचर दो-तीन क्षण तक चकित होकर बकते रहे, लेकिन किसी ने शिखिमुखी पर भाला नहीं चलाया। इससे शिखिमुखी को बड़ा अच्छा मौका मिला। उसने सारी ताकत लगाकर एक के घुटने पर लात मारी और उसके चीख-चिल्लाकर गिरते समय उसके नीचे से निकलकर दुश्मनों की आँखों में धूल झोंककर निकल भागा।

पुजारी के अनुचर यह जानकर भी कि शिखिमुखी भाग रहा था, खुद के पैरों में चोट लगने के डर से तलवार का उपयोग नहीं कर पाए। शिखिमुखी ने दुश्मन को ही कवच के रुप में इस्तेमाल किया था लेकिन वह थोड़ी ही दूर भाग सका कि पुजारी के सभी अनुचर एक साथ चीख उठे, ''उसे मार दो, जाने न दो,'' और यह कहकर वे उसका पीछा करते हुए घेरने का प्रयास करने लगे।

उसी वक्त दूर से एक सीटी की सुनाई दी। वह शिथिलालय के पुजारी द्वारा अपने अनुचरों को दी जाने वाली सूचना थी। उस चेतावनी को सुनकर अनुचरों में से एक ने कहा, ''पुजारी साहब बुला रहे हैं, दौड़ो। शायद कोई ज़रुरी काम होगा।''

''इस भागने वाले शबर का क्या होगा? इसे पकड़कर पुजारी साहब के पास नहीं ले जाना है?'' एक ने सवाल किया।

एक अनुचर इस सवाल का जवाब देने ही जा रहा था कि इतने में लाल कुत्ते के भौंकने की

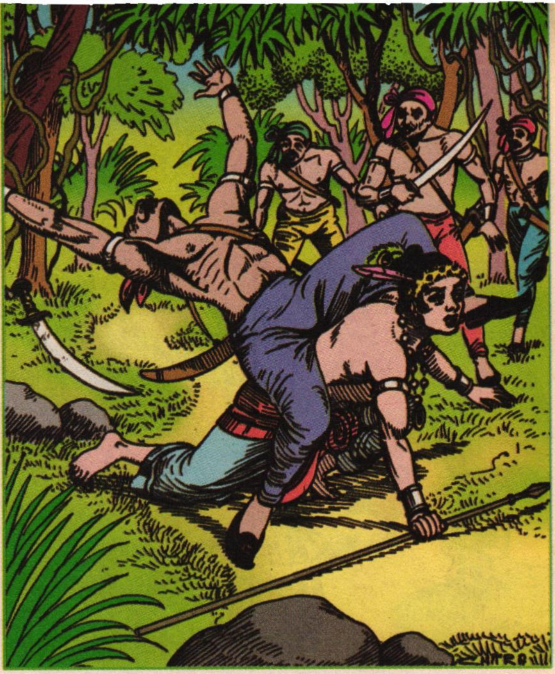

आवाज़ सुनाई दी और उसके साथ ही शबरों की आवाज़ें भी आईं, ''शिखिमुखी! शिखिमुखी!'' चोरों ने उन्हें इस प्रकार पुकारते हुए उसी ओर दौड़कर आते देखा। पुजारी ने इस बार और ज़ोर से सीटी बजाई। यह खतरे की सूचना थी। उसके अनुचर बिना किसी प्रकार की सूचना के घायल चोर को कंधे पर डालकर जंगल की ओर भागने लगे।

शिखिमुखी ने लाल कुत्ते को ज़ोर से पुकारा। उसकी आवाज़ सुनते ही कुत्ता दौड़ता हुआ उसके पास आ पहुँचा। उसके पीछे विक्रम केसरी और चार-पाँच शबर भी आ पहुँचे।

''शिखिमुखी मैं यह सोचकर डर गया था कि तुम कहीं किसी खतरे में फँस गए हो,'' विक्रम केसरी ने शिखिमुखी से कहा।

"वास्तव में भयानक खतरे में फँस गया था। किस्मत ने साथ दिया इसलिए बच पाया हूँ। वे दुष्ट इसी जगह पर छुपकर मुझपर टूट पड़े और मुझे औंधे मुँह लटकाकर मार डालने की कोशिश की। ये सब आराम से बताऊँगा। पहले हमें वह जगह ढूँढनी है जहाँ पुजारी के अनुचर छुपे रहते हैं। एक दो ही सही, पर उनका पीछा कर सकें तो सूरज निकलते ही उस सारे दल का जंगली जानवरों की तरह शिकार खेल सकते हैं।" शिखिमुखी ने कहा।

"वे जंगल में कहाँ छुपे हैं, इसका पता लगाने के लिए तो हम दोनों ही बहुत हैं। लाल कुत्ता उनकी गंध लेकर हमें रास्ता दिखाएगा। सुबह होते ही बस्ती के लोग हमारी मदद को आ जाएँगे।" यह कहता हुआ विक्रम केसरी शबरों की ओर मुड़ा और बोला, "तुम लोग अब जाओ। यह देखना कि पुजारी के अनुचर फिर बस्ती में आग न लगा दें। हम दोनों में से कोई एक जंगल में उन दुष्टों का पता लगाकर उनका समाचार लाएगा।"

शबर चले गए और विक्रम केसरी और शिखिमुखी जंगल की ओर रवाना हुए। आगे-आगे लाल कुत्ता ज़मीन की गंध लेते हुए चल रहा था। शिखिमुखी को विश्वास हो गया कि कुत्ते ने सही रास्ते का पता लगाया है। धीरे-धीरे कुत्ता उन्हें एक पहाड़ के पास ले गया। वहाँ एक विशाल वृक्ष के नीचे खड़े होकर थोड़ी देर तक ज़मीन सूँघता रहा, फिर पेड़ का चक्कर काटकर सर उठाकर ऊपर देखने लगा।

विक्रम केसरी को कुत्ते का यह व्यवहार कुछ विचित्र सा लगा। वह कुछ बोलने ही जा रहा था कि शिखिमुखी ने उसे रोककर सिर उठाकर पेड़ों की डालों में ध्यान से देखा। डालों के झुरमुट में उसे एक मनुष्य का रुप दिखाई दिया। ध्यान से देखने पर शिखिमुखी को पता लगा कि वह पुजारी का अनुचर है। वह पेड़ की डाल को अपने हाथों में बाँधकर चित लेटा बेखबर सो रहा था। उसके म्यान से एक तलवार नीचे की ओर लटक रही थी।

शिखिमुखी ने उसे विक्रम केसरी को दिखाकर कहा, "विक्रम! यह शिथिलालय के पुजारी का पहरे दार होगा। पुजारी ने इसे यह आदेश दिया होगा कि यह इस पेड़ पर छिपा रहकर इधर आने जाने वालों पर नज़र रखे और उनकी खबर उसे पहुँचाए। लेकिन यह बदमाश रात-भर जंगल में घूमकर सुबह के समय मजे से सो रहा है।"

CHITRA
H

"इसे ज़िन्दा पकड़कर हमें यह रहस्य जानना है," विक्रमकेसरी ने कहा।

"ज़िन्दा पकड़ना ही नहीं, हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि यह बदमाश जागते ही चिल्ला न पड़े नहीं तो पुजारी को खबर हो जाएगी कि हम इस स्थान पर आ चुके हैं। देखो सूर्योदय हो रहा है। तुम यहीं रुको, मैं चुपचाप पेड़ पर चढ़कर उसे नीचे खींच लाऊँगा।" यह कहकर शिखिमुखी ने पास के पेड़ों की कुछ लताओं को तोड़ा और उनका रस्सा सा बनाकर रेंगता हुआ पेड़ पर चढ़ गया। सोते हुए व्यक्ति के निकट पहुँचकर उसने फ़ुर्ती से उसका मुँह दबा लिया और उसकी आँखों के सामने भाला लहराया। पुजारी के अनुचर की नींद खुली तो सामने सूरज की किरणों में चमकता भाला दिखाई दिया। वह डर कर काँपता हुआ चिल्लाने को हुआ कि शिखिमुखी ने डाँटकर कहा, "चिल्लाए तो तुम्हारी छाती में भाला भोंक दूँगा। कुछ दिन और जीवित रहना हो तो चुपचाप मेरे साथ पेड़ से नीचे उतर आओ।" यह कहते हुए शिखिमुखी ने उसके म्यान से तलवार निकाल ली। पुजारी का अनुचर काँपता हुआ शिखिमुखी के पीछे पेड़ से उतर आया।

शिखिमुखी ने उसे पेड़ से सटकर बैठने को कहा और पूछा, "तुम उस पुजारी के सेवक हो ना? सच बोलना नहीं तो तुम्हें इस लाल कुत्ते का आहार बना दूँगा। इसलिए बतला दो कि वह इन पहाड़ों में किस गुफ़ा में रहता है।"

पुजारी का अनुचर जान के डर से काँपता हुआ बोला, "कृपा करके मुझे मारना मत। सच कहता हूँ पुजारी साहब इस पहाड़ी में रोज एक गुफ़ा बदलते हैं। कल शाम को वे भूत की तरह दिखने वाली उस चट्टान के पीछे की अँधेरी गुफ़ा में छुपे थे, मैंने अपनी आँखों से देखा था। पर मुझे नहीं पता कि वे अब वहाँ पर हैं या नहीं।"

"सच कह रहे हो?" शिखिमुखी ने गरजकर पूछा।

"पुजारी बड़ा झूठा है। उसका अनुचर भिन्न क्यों होगा? लाल कुत्ते को भड़काओ शिखिमुखी!" विक्रमकेसरी ने कहा।

पुजारी का अनुचर जान के डर से चिल्लाने ही वाला था कि शिखिमुखी ने भाला तानकर कहा, "चिल्लाओ मत और सच बोलो। लाल कुत्ता तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा।"

''मैं सच ही बोल रहा हूँ। मेरी रक्षा करो।'' पुजारी के अनुचर ने रोनी सूरत बनाकर कहा।

चोर की आँखों में आँसू देखकर विक्रमकेसरी को उस पर रहम आ गया। वह शिखिमुखी का कन्धा पकड़कर बोला, ''शिखि, बेचारे को मारो मत। लगता तो यही है कि ये सच बोल रहा है। हम उस अँधेरी गुफ़ा में जाकर देख लेंगे, वैसे पुजारी अव्वल दर्जे का बदमाश है। वह अपनी सेवा करने वाले नौकरों से भी दिल खोलकर शायद ही बोलता हो। हो सकता है बेचारा यह भी असली बात न जानता हो।''

शिखिमुखी ने लाल कुत्ते को अपने पास बुलाया और चोर से बोला, ''हमें तुमको थोड़ी देर के लिए हाथ-पैर बाँधकर, मुँह में कपड़ा ठूँसकर, इन झाड़ियों में छुपाकर जाना होगा। तुम्हारे मालिक को देखकर लौटते समय तुम्हारे बन्धन खोल दूँगा।'' यह कहकर उसने उसके हाथ-पैर बाँध दिए। मुँह पर जंगली लताओं से बुना एक जाल बाँध दिया। फिर उसे गठरी की तरह उठाकर एक घनी झाड़ी में फेंक दिया।

इसके बाद, शिखिमुखी, विक्रमकेसरी और लाल कुत्ता पुजारी के अनुचर के बताए पहाड़ी प्रदेश की ओर रवाना हुए। वहाँ उन्हें मनुष्यों के पैरों के चिह्न दिखाई दिए। उन्हें देखते हुए वे कुछ ही आगे बढ़े थे कि चार-पाँच आदमियों के एक-साथ चल सकते योग्य एक पहाड़ी रास्ते पर एक काट की मूर्ति दिखाई दी। उसके हाथों में खून से सना एक त्रिशूल था।

विक्रमकेसरी पहले तो उस भयंकर मूर्ति को अचरज से देखता रहा, फिर अपने रास्ते बढ़ा। इतने में शिखिमुखी ने उसका कन्धा पकड़कर उसे पीछे खींचा और कहा, ''विक्रम, ठहरो। यदि हमें उस रास्ते पर जाना है तो पहले उस मूर्ति के पैरों के नीचे से जाना होगा। उसके हाथ में खून से सने त्रिशूल को देखा?''

ये दोनों बात कर ही रहे थे कि लाल कुत्ता काट की मूर्ति के निकट जाकर उसके पैरों के नीचे से आगे बढ़ने लगा। अचानक काट की मूर्ति तेज़ गति से हिलने और काँपने लगी। उसके हाथ का त्रिशूल 'झुम' का आवाज़ करता हुआ बिजली की गति से नीचे की ओर आया! ***(आगे है)***

अग्नि परिवर्तन

(अब तक की कहानीः शान्तनु और शिवा के दादाजी, डॉ. पुरन्जन में कुछ बोलचाल हो जाती है। ऐसा लगता है कि शान्तनु कभी दादाजी का विद्यार्थी था। रात में शिवा को एक रहस्यमय प्राणी जगा देता है जो शायद शान्तनु का था।)

जब सुबह मेरी नींद खुली, तो मुझे यकीन नहीं हुआ कि वह सब सच में हुआ था या मैंने कोई सपना देखा। ड्रैगन की तरह दिखने वाले उस मेज का तो कोई नामोनिशान वहाँ पर दिखाई नहीं दिया। न ही आगे के दिनों में मुझे उसका कोई अता-पता मिला। मनुष्यों को अधिकांशतः गुफ़ाओं

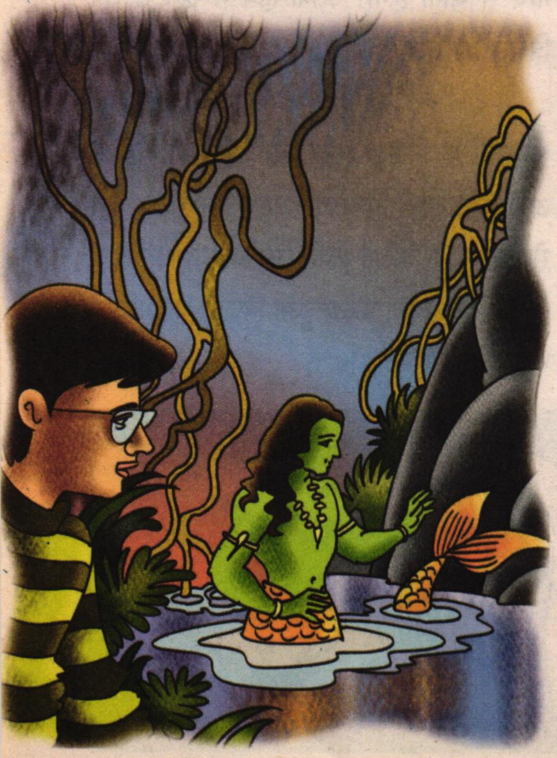

में ही रहना पड़ा। कभी-कभी, अपने नीले चेहरे पर समुद्र की सी शान्ति लिए मयूरी वहाँ आ जाती थी। अधिकांश लोग ऊपर कहीं जाने से डरते थे क्योंकि उन्हें नीले मगरमच्छ की कुटिल दृष्टि ध्यान आ जाती थी जब वे सज़ा पाने से बाल-बाल बचे थे। वे आपस में बातें करते हुए, गुफ़ाओं के नज़दीक के पानी में तैरते हुए, और कभी-कभी हमारे अतिथियों, लेमन और ओमन से बातें करते हुए अपना समय बिता रहे थे, तो कभी-कभी चीनी हाथी को भी अपने साथ ले आते थे।

समुद्री मानव गुफ़ा में अक्सर आते थे। लेकिन उन्होंने हमसे मित्रता करने का कोई प्रयास नहीं किया। मैं समझ नहीं पाता था कि क्या वे हमारी रक्षा कर रहे हैं - या तो हमें दूसरे प्राणियों से बचा रहे हैं या बहुत दूर तक जाने से रोक रहे हैं। वे शान्त थे और दखलन्दाज़ी नहीं करते थे, लेकिन हममें से किसी के ऊपर ज़मीन की तरफ तैरने का प्रयास करने पर उनकी चमकदार आँखों का रंग तेज़ी से बदलता था। वे चुपचाप घूरते थे या बिना कुछ कहे एक ठंडा, दृढ़ और मछली जैसा हाथ ऐसा करने वाले के कंधे पर रख देते थे। उनका

लहजा चेतावनी और चिंता के बीच का होता था। अब तक किसी ने भी यह जानने का प्रयास नहीं किया था कि उनकी बात न मानकर ऊपर चले जाने पर क्या होगा?

पहले दिन के विवाद के बाद से ही दादाजी और शान्तनु एक-दूसरे के साथ नहीं रहते थे। लेकिन निम्मी और हर्ष अनुनिर्वा को खूब पसन्द कर रहे थे और वहाँ सब-कुछ देखने-जानने की कोशिश कर रहे थे। वहाँ कोई स्कूल नहीं था, न ही ट्यूशन और न सुबह दूध पीना पड़ता था - कोई भी बच्चा और क्या चाह सकता था? अब तक निम्मी को शैवाल के कई हार मिल गए थे जो लोगों ने उसके लिए बनाए थे। पानी में किसी राजकुमारी की तरह अपने राज्य में घूमते हुए वह गर्व से उन मनकों को छूकर आनन्दित होती थी।

एक दिन, जब मैं गुफ़ा के मुहाने पर बैठा था, तब हर्ष मेरे पास आया और बोला, "शिवा, मैं तुमसे कुछ पूछने आया हूँ...लेकिन निम्मी को यह मत बताना।"

मैंने स्वीकृति में सिर हिलाया। वह बिना कुछ बोले कुछ देर मेरे पास बैठा रहा। हम पानी में साँपों की तरह ऊपर-नीचे तैरते पौधों को देखते रहे। फिर वह मेरी तरफ मुड़ा और बोला, "मेरे पिताजी...वे रोज़ रात को ऊपर की ज़मीन पर जाते हैं।"

मैं चकित रह गया। शान्तनु क़ाफ़ी शान्ति से दिन बिता रहा था। मैंने यह मान लिया था कि मेज मेरी कल्पना ही था। लेकिन हर्ष के शब्दों ने मेरे

पुराने सन्देहों को फिर जगा दिया था। मैं कुछ कहना नहीं चाहता था, क्योंकि हर्ष अभी बच्चा ही था और मेरे पास कोई सबूत नहीं था कि शान्तनु कुछ कर रहा था।

"तो तुम्हें क्या चिन्ता है?" मैंने पूछा।

"वहाँ कई प्रकार के प्राणी थे"...उसकी आवाज़ धीमी हो गई..."मुझे डर है उनकी मृत्यु न हो जाए," अंत में उसने कहा।

"वे कब से ऐसा कर रहे हैं?"

"मुझे नहीं पता...एक रात में निम्मी के पास सो रहा था जब मुझे अपने पैरों पर कुछ पट्टियों जैसा महसूस हुआ। मैं जाग गया और मुझे चमकदार आँखें दिखाई दीं। मैं बहुत डर गया था लेकिन चुप रहा क्योंकि मैं निम्मी को नहीं उठाना चाहता

"फिर उन्होंने क्या किया हर्ष?"

"फेंक दिया...उन्होंने उस जानवर को आग में फेंक दिया।" उसने वेदना के साथ कहा। "वह बाहर आने की कोशिश कर रहा था, लेकिन वे उसे अन्दर धकेलते रहे...उसे बहुत पीड़ा हो रही थी...और फिर...उसके शरीर की पट्टियाँ निकलने लगीं...मुझे उनकी भीतर का गुलाबी मांस दिखाई दे रहा था...वह बहुत तकलीफ़ में था शिवा!"

मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे रोने दिया।

"लेकिन मेरे पिताजी ने उसकी मदद नहीं की! वे उसे लपटों में वापस धकेलते रहे...यह बहुत ही...बहुत भयानक था!"

मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन मेरा सिर सवालों के कारण फटा जा रहा था। इस सबका अर्थ क्या था? शान्तनु ने मेज को आग में क्यों झोंक दिया? ऊपर की ज़मीन पर जाने के पीछे उसका मकसद क्या था? और समुद्री मानवों ने उसे रोका क्यों नहीं?

थोड़ी देर में हर्ष चुप हो गया। अपनी आस्तीन से आँसू पोंछकर वह फिर बोला। इस बार उसकी आवाज़ में अधिक स्थिरता थी।

"फिर उसका आकार बड़ा होने लगा..."

"किसका?"

"उस जानवर का...दरअसल बढ़ा नहीं, वह बदलने लगा। वह और विशाल होता गया...और उसका चेहरा भी बदल गया और वह डॉल्फ़िन बन गया।"

था...हो सकता था वह जानवर हम दोनों पर हमला कर देता।"

"तो इसने भी मेज को देखा है," मैंने सोचा।

वह कहता रहा, "फिर मैंने पिताजी को उसे अपने हाथों में उठाते देखा। वह किसी बच्चे के कराहने जैसी आवाज़ निकाल रहा था और पिताजी उसे चुप करने की कोशिश कर रहे थे। फिर वे वहाँ से चल दिए, गुफ़ा के मुहाने की ओर, और मैं उनके पीछे हो लिया..."

"फिर?" मैंने जिज्ञासा दिखाई।

"पानी के पास पहुँचने पर उन्होंने उस जानवर को नीचे रख दिया और आग जलाई..."

हर्ष ने थूक निगला। मैं देख रहा था कि वह व्यग्र था। उसकी छोटी-छोटी भूरी आँखें मेरे चेहरे की ओर नहीं उठ रही थीं।

"डॉल्फ़िन?!" मैंने आश्चर्य से कहा।

"हाँ। और फिर वह आग अपने-आप बुझ गई। फिर वह डॉल्फ़िन पानी में चली गई और पापा उसकी सवारी करने लगे।" यह सब इतना शानदार लगा कि एक पल के लिए मैं सोचने लगा कि शायद हर्ष यह सब मनगढंत सुना रहा था। लेकिन उसके चेहरे के भाव देखकर मैंने तुरन्त अपने विचारों को झटका। यदि मैं भी ट्रेन में लेमन और ओमन की बात बताने जाता तो किनते लोग मरा यकीन करते?

"तुम मुझसे क्या चाहते हो हर्ष?" मैंने पूछा।

"मैं चाहता हूँ तुम उनके पीछे जाओ और देखो कि वे क्या कर रहे हैं," वह बोला।

"क्या तुमने कोशिश की थी?"

"एक बार। जब मैंने पहली बार उन्हें उस जानवर के साथ देखा था। लेकिन एक समुद्री मानव ने मुझे रोक दिया।"

"क्या कहा उसने?" मैंने उत्सुकता से पूछा।

"उसने कहा कि मैं बड़ा होने के लिए बहुत छोटा हूँ।"

समुद्री मानव अक्सर इस तरह की बेसिर-पैर की बातें करते थे। मैंने सोचा, शायद हमेशा पानी में रहने से उनके दिमाग़ पर कुछ असर हो जाता था।

"क्या तुमने उनके वापस आने का रास्ता देखा?"

"नहीं। वह समुद्री मानव वहीं खड़ा होकर मुझे तब तक घूरता रहा जब तक मैं अपनी जगह पर वापस नहीं चला गया।" वह बोला।

"जब उस समुद्री मानव ने तुम्हें उनके पीछे नहीं जाने दिया, तो वह मुझे क्यों जाने देगा?"

"यहाँ तुम्हारे कुछ दोस्त भी हैं...तुम हम जैसे नहीं हो...तुम इन्हें जानते हो," मेरा हाथ कसकर पकड़कर हर्ष बोला। मैं कुछ देर तक सोचता रहा। उत्सुकता मुझे मारे डाल रही थी। मैं यह पता लगाना चाहता था कि शान्तनु क्या कर रहा था...जितना मैं उसे जानता था, वह कुछ ऐसा नहीं कर रहा होगा जिससे कोई गड़बड़ नहीं हो!

"ठीक है," मैंने कहा। "हम एक योजना बनाते हैं, मैं समुद्री मानवों का ध्यान बँटाऊँगा और तुम उसकी निगरानी से बाहर निकल जाना।'

उसने आतुरता से सिर हिलाया। ''लेकिन मैं तुम्हें अकेला नहीं जाने दूँगा। मुझे लगता है मुझे तुम्हारे साथ चलना चाहिये,'' मैंने कहा। हर्ष अपनी उम्र के हिसाब से काफी हिम्मतवाला था, लेकिन था तो बच्चा ही। एक ऐसी जगह पर, जहाँ मनुष्यों से कोई प्रेम नहीं था, उसका दखल देना उसके जीवन को ख़तरे में डाल सकता था।

''हम ऐसा करेंगे...'' मैंने बोलना शुरु किया। और तभी मुझे अपने कंधे पर किसी का हाथ महसूस हुआ। मैं मुड़ा। वह शान्तनु था। क्या वह हमारी बातें सुन रहा था? वह इतनी सफ़ाई से हमारे पीछे आकर बैठ गया था कि मैं उसकी आवाज़ बिल्कुल नहीं सुन पाया! हर्ष का चेहरा पीला पड़ गया और उसने अपनी आँखें झुका लीं। मैंने शान्तनु की अंगारे बरसाती आँखों के सामने शान्त दिखने का प्रयास किया।

''क्या तुम लोग रोमांच की तलाश में हो?'' उसने सामान्य ढंग से पूछा।

''नहीं मैं तो बस...मैं शिवा से पूछ रहा था...'' हर्ष बड़बड़ाया।

''सच में? जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तब इस जगह पर रोमांच अवश्य पसंद करता,'' शान्तनु से खींसें निपोरकर कहा। ''यह कितना आश्चर्यजनक है...कैसे सबकुछ बदल जाता है!'' मुझे लगा कि उसने अन्तिम शब्दों को थोड़ा ज़्यादा ही ज़ोर देकर बोला था, लेकिन शायद हर्ष ने इसपर गौर नहीं किया था।

''सावधान रहना शिवा। जादुई कहानियों में राजकुमार मेंढक बन जाते हैं...इसका उलटा भी हो सकता है।'' उसकी आवाज़ में गुस्सा स्पष्ट था। ''और मैंढकों को पैरों से बड़ी आसानी से कुचला जा सकता है,'' उसने ठंडे स्वर में कहा।

मुझे लगा जैसे डर से मेरा दिल ठंडा पड़ गया। मुझे यकीन था उसने हमारी बातें सुन लीं थीं। उसकी कठोरता से भरी आँखों में झाँकते समय मुझे लगा कि वास्तव में मुझे रोमांच तो चाहिए ही था।

(जारी)

- सौम्या राजेन्द्रन

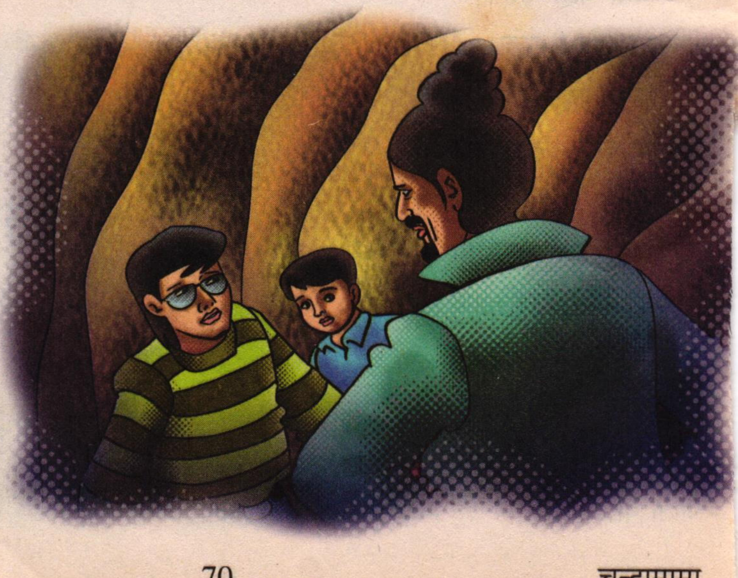

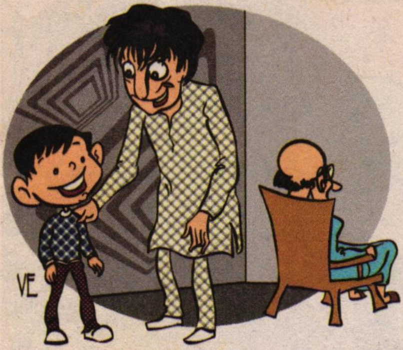

बेटाः दादाजी के सिर पर बाल क्यों नहीं हैं?
पिताः यह बुद्धिमानी की निशानी है।
बेटाः अब समझा आपके बल इतने लंबे क्यों हैं।

मदन सेल्समैन से, ''मुझे १५ इंच का परदा चाहिए।'' सेल्समैन, ''यह तो बहुत छोटा है!!!'' मदन, ''कंप्यूटर के मॉनिटर के लिए चाहिए, कंपयूटर में विंडोज़ है।''

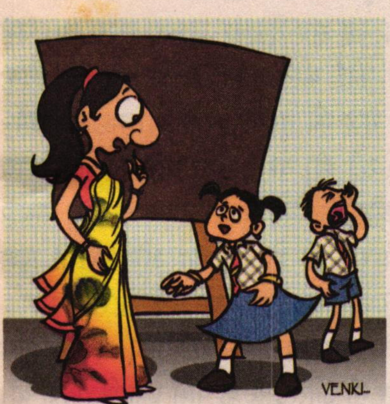

सुनन्दाः आपने कहा था कि स्कूल का डेन्टिस्ट दर्दरहित होगा, लेकिन ऐसा नहीं था।
टीचरः क्या उसके कारण तुम्हें दर्द हुआ?
सुनन्दाः नहीं, लेकिन जब मैंने उसकी उँगली काटी तो वह दर्द से ही चिल्लाया था।

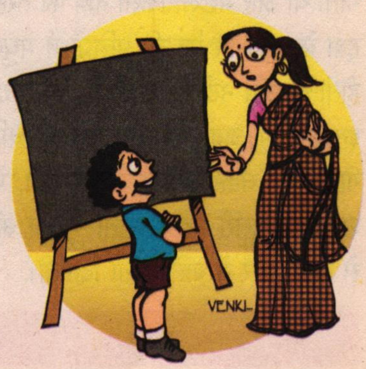

अंग्रेज़ी अध्यापिकाः श्याम मुझे तुम्हारे पिताजी का नाम अंग्रेज़ी में बताओ।
श्यामः मेरे पिताजी का नाम बटर रेड है।
अध्यापिकाः क्या?
श्यामः जी मैडम, उनका नाम मक्खन लाल है।

अपनी-अपनी महानता

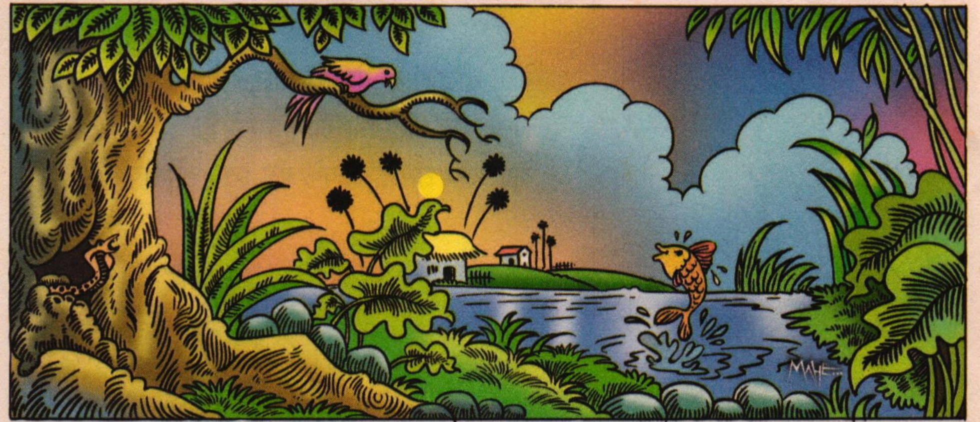

बहुत समय पहले की बात है, एक बड़ा सुन्दर गाँव था। गाँव के पास एक छोटी नदी बहती थी। नदी के किनारे के एक पेड़ के नीचे साँप की एक बहुत बड़ी बाँबी थी।

एक सुन्दर छोटी सी चिड़िया उस पेड़ पर रहती थी, एक छोटी सी मछली उस नदी में, और एक बड़ा साँप बाँबी में रहता था।

साँप हमेशा गुस्से और व्यग्रता से चलता था, चिड़िया हमेशा मीठे सुर में गाती थी और मछली हमेशा लहराकर तैरती थी। जब भी बारिश या तेज़ धूप होती थी, जब कोहरा या बादलों से भरा आसमान होता था, तो चिड़िया बाँसुरी जैसी मधुर आवाज़ में गाती थी और मछली किसी नाव की तरह तैरती थी। हवा के बहने पर पेड़ की पत्तियों में मधुर सरसराहट होती थी और नदी की लहरों में कंपन पैदा होता था। इन क्षणों में, जब साँप ऊपर देखता, चिड़िया हवा में गोल-गोल चक्कर लगाती दिखाई देती, पेड़ की एक शाखा से दूसरी पर उछलती-कूदती और झाड़ियों से मद्धम स्वर में बातें करती दिखती।

जब साँप आस-पास देखता तो मछली पानी में उछलती-कूदती दिखाई देती। कभी वह पानी में गोल-गोल तैरती तो कभी बिजली की तरह एक कोने से दूसरे की तरफ तैरती।

साँप यह सब देखकर जलता रहता था। उसे इनमें से कोई करतब नहीं आता था। एक दिन, चिड़िया रोज़ की तरह गा रही थी। मछली धीमे-धीमे तैर रही थी। यह देखकर साँप को पहले क्रोध आया और फिर वह दुःखी हो गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि चिड़िया और मछली खुश क्यों हैं? और वह खुश क्यों नहीं हो सकता?

उसी समय, दो लड़के वहाँ आए। एक के पास कैट बॉल थी और दूसरे के पास एक फ़िशबुक थी। बस फिर क्या था! चिड़िया हवा में उड़ गई और मछली ने गहरे पानी में गोता लगा दिया। साँप ने अपनी बाँबी से सिर निकालकर थोड़ी सी फुफकारने की आवाज़ की। तुरन्त ही दोनों लड़के डर के मारे वहाँ से भाग गए।

आदिलक्ष्मी

साँप को गर्व महसूस हुआ और उसने सोचा, "चिड़िया और मछली मुझसे डरती हैं। वे मनुष्यों से भी डरती हैं। और ये मनुष्य मुझसे डरते हैं!" अगले ही पल उसे फिर दुख होने लगा।

"वे मुझसे डरते हैं, लेकिन फिर भी चिड़िया और मछली खुश हैं। मैं खुश नहीं हूँ। क्यों?" उसे इस सवाल का उत्तर हीं मिला।

दिन बीतते गए। नागों का त्योहार, नाग पंचमी आ गया। गाँव की सारी औरतें साँप की बाँबी के पास पहुँचीं। उनके पास छोटी टोकरियों में दूध, फल, फूल और मेवे थे। उन्होंने साँप की बाँबी पर वह सब सामान और दूध चढ़ाया। फिर वे वहाँ भजन गाने लगीं। उनके साथ बहुत से बच्चे भी आए थे। वे चीख-पुकार कर रहे थे और खेल रहे थे। खेल-खेल में, वे पका हुआ चावल और मेवे आस-पास फेंक रहे थे।

चिड़िया और मछली को इसमें बहुत मज़ा आया। कुछ मेवे साँप की बाँबी के आस-पास बिखरे थे। कुछ चावल हवा के कारण नदी में जा गिरा। मछली ने उसे खाकर पेट भरा। वह खुशी-खुशी पानी में गोल-गोल चक्कर लगाने लगी। इसी तरह चिड़िया मेवे खाती रही। चिड़िया सुरीली आवाज़ में गा रही थक्ष। चिड़िया और मछली की खुशी का ठिकाना न था। बच्चे भी त्योहार का पूरी तरह आनन्द ले रहे थे। लेकिन बाँबी के भीतर साँप की स्थिति ठीक न थी। दूध के बहने से अन्दर गीला हो गया था। यह साँप के लिए कष्टप्रद था। अन्त में उसे बाहर आना ही पड़ा। बाहर आकर वह एक झटके से पास की झाड़ी में घुस गया।

यह साँप के लिए दुखद था। कुछ लोगों ने उसे देखा और चिल्लाते हुए वहाँ से भागे। खेतों में काम कर रहे मजदूर डंडे लेकर वहाँ आए और पूछने लगे,

"साँप कहाँ है?" वे उसे मारने के लिए तत्पर थे।

लेकिन कुछ महिलाओं ने इसका विरोध किया और कहा, "आम दिनों में साँप मारना ठीक है, लेकिन आज नागों का ही त्योहार है। आज उसपर हिंसा करना ग़लत है," और मजदूर वहाँ से चले गए।

इसके बाद, महिलाओं ने अपना पूजा-पाठ खत्म किया औ वहाँ से चली गईं। इस पूरे समय, साँप छुपकर सब देखता रहा। उसकी साँस रुक सी गई थी। वह बहुत डरा हुआ था। पूरे दिन वह छुपा ही रहा। दिन इसी परेशानी में बीत गया।

लेकिन साँप इस बात को भूल न सका। उसने सोचा, "मुझसे डरने वाले और मेरी पूजा करने वाले मनुष्य मुझे मारने की कोशिश कर रहे थे। मुझे हमेशा छुपकर रहने पड़ता है, लोगों से बचना पड़ता है। चिड़िया और मछली तो कितनी खुश हैं?"

यह सोच-सोचकर उसका मन दुखी था। एक

दिन उसने चिड़िया और मछली को बुलाया। मछली किनारे पर आ गई और चिड़िया नीचे की टहनी पर आ बैठी। दोनों ने पूछा, ''क्या बात है?''

साँप बोला, ''तुम लोग मनुष्यों से डरती हो और मनुष्य मुझसे डरते हैं। इसके बावजूद तुम लोग खुश हो और मैं नहीं हूँ। हममें अन्तर क्या है? इसका क्या कारण है?''

चिड़िया पंख फड़फड़ाकर बोली, ''तुम हमेशा गुस्से और आतुरता में जीते हो। तुम्हारी चमड़ी कितनी चिकनी है। तुम बिजली की गति से चलते हो। लोग तुम्हारी पूजा करते हैं। लेकिन तुम उन्हें डराते हो। कभी-कभी तुम उन्हें मार भी देते हो। तुम्हें इसी में अपनी महानता लगती है। जहाँ तक हमारा सवाल है, यह मछली पाने में तैती है, और मैं हवा में उड़ती हूँ, इसलिए हमसे किसी को डर नहीं है। मैं तुम्हारी तरह फुफकार नहीं सकती, और न ही मैं मछली की तरह तैर सकती हूँ। लेकिन मैं उड़ तो सकती हूँ? यही मेरी महानता है। तुम्हारी अपनी महानता है। मैं अपनी तुलना औरों से करके दुखी नहीं होती। मैं उस चीज़ों से खुश रहती हूँ जो ईश्वर ने मुझे दी हैं। मैं यह सोचकर खुशी से गाती हूँ कि 'जिस भगवान ने मुझे मेरे गुण दिए हैं, वह मेरा पेट भी भरेगा।' ''

साँप ने उत्तर की आशा में मछली की ओर देखा। मछली ने अपनी पूँच हिलाई और बोली, ''मेरा उत्तर भी चिड़िया के ही समान है।''

मुस्कुराकर चिड़िया आसमान की ओर उड़ गई और मछली गहरे पानी की ओर चली गई।

साँप का मन दुखी था। वह धीरे-धीरे अपनी बाँबी की ओर चल पड़ा। वह सोच रहा था, ''मैं इसपर गर्व करता था कि लोग मेरी पूजा करते हैं। और मुझे यह याद नहीं रहा कि कुछ लोग मुझे देखकर मुझे मारने की कोशिश करते हैं। डर की जगह मुझे केवल अपना अहम् याद रहता है। मुझे हमेशा चिड़िया और मछली की स्वतंत्रता और खुशी से जलन होती है। मैंने यह नहीं सोचा कि लोगों को काटकर मैं उन्हें डरा रहा हूँ इस कारण मैं चिड़िया और मछली की तरह खुश नहीं हूँ।''

उसे सच्चाई का अहसास हो गया था और उसने सीख ले ली थी। खुश रहने के लिए यह आवश्यक है कि हम गुस्से, आतुरता और अहम् को अपने से दूर रखें। साँप को अब इस बात का पूरा ज्ञान था। बस अब उसे इसपर अमल करना था।

HERCULES
MTB TURBODRIVE
RIDE YOUR PASSION
CROME
WHERE THE ROAD ENDS,
A JOURNEY BEGINS.
Embark on a new adventure every time you get on the Crome. Stylish looks with a flawless performance to match, this cycle is designed to complement your inner spirit.
www.ticyclesindia.com

RNI NO.MAHHIN07661/13/1/20
CHANDAMAMA (Hindi) July 2010 Registrar of Newspapers of India [redacted]
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11
REG NO.MH/MR/N/130/MBI/1